ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एव मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

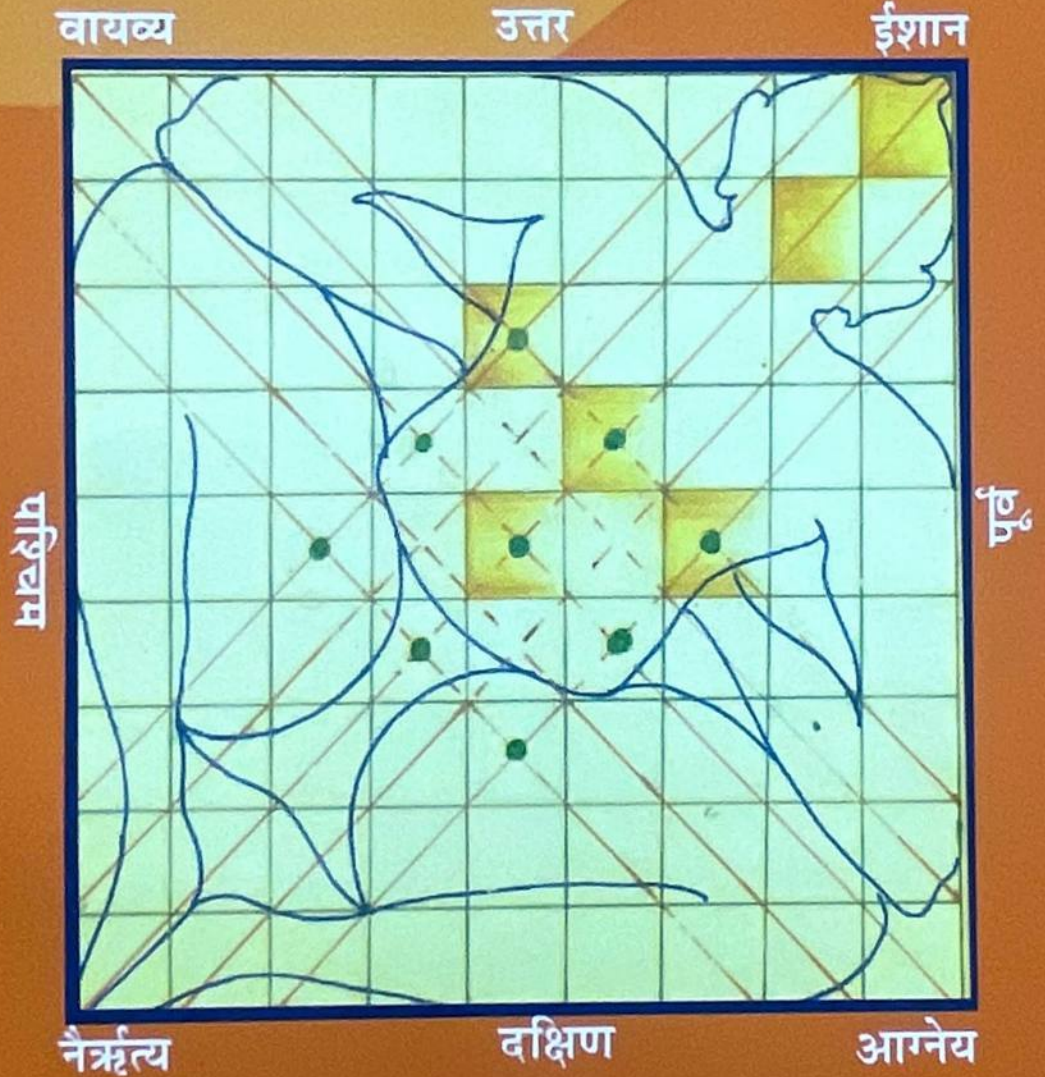

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2019
मुद्रण वर्ष - 2021

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1. **वृक्षायुर्वेदे** वराहमिहिरस्यावदानम्
डॉ. सुशीलकुमारः, 1-7
सहाचार्यः ज्योतिषविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६
श्रीखेमराजरेग्मी
शोधच्छात्रः ज्योतिषविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

2. वैदिकवाङ्मये वास्तुनिदर्शनम्
डॉ. हनुमानमिश्रः 8-12
सहाचार्यः, वेदविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

3. वास्तुशास्त्रदृशा जम्बूद्वीपविमर्शः
डॉ.अशोकथपलियालः 13-21
सहाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६
गोविन्दवल्लभः
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

4. जयसिंहनिर्मापितस्य जयपुरनगरस्य वास्तुशास्त्रीयाध्ययनम्
डॉ. प्रवेशव्यासः 22-28
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६
श्रीकृष्णचन्द्रशर्मा
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

RNI/MPHIN/2013/61414

UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, प्रथम अंक

मार्च-अप्रैल 2020

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Bharatiya Jyotisham

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	सौरचान्द्र पंचांग एवं अधिमास	डॉ. अशोक थपलियाल	02
2.	भारतीय परिपेक्ष्य में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत	विनोद कुमार पाण्डेय	05
3.	संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित ज्योतिषशास्त्रीय सन्दर्भ	डॉ. विशाल भारद्वाज	10
4.	वैदिक वाङ्मय में राजधर्म एवं मानवकल्याण	सुनिता कुमारी	14
5.	ज्योतिष की दृष्टि से कृषि मे वृष्टि का महत्त्व	वैजयन्तीमाला	17
6.	नाटक की उत्पत्ति और प्रयोजन	डॉ. हीरालाल दाश	20
7.	रस-मीमांसा (भोजराज और विद्यानाथ के विशिष्ट सन्दर्भ में)	कपिल देव भट्ट	22
8.	आदिवासी समाज का विनाश और वैश्वीकरण का विकास	डॉ. विनोद कुमार विकास पाराशर	26
9.	वेणीसंहार नाटक के धीरोद्धत नायक	डॉ.गीताञ्जली नायक	30
10.	नीतिशतक में जन्मान्तरवाद एवं मोक्ष संबंधी तथ्य	जितेन्द्र कुमार धनवारे	32
11.	भविष्य पुराणोक्त भूमि चयन प्रक्रिया की समीक्षा	रोहित कुमार पचौरी	36

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed
Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट चैन्नै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,
फेज - 3, लहारपुर,
भोपाल - 462043, मध्यप्रदेश
Web - www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of **Bharatiyajyotisham**
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3,
Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - ROHIT PACHORI

सम्पादकीय

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम् शोधपत्रिका के प्रकाशन में आठ वर्ष बीत चुके हैं। नाम के अनुरूप ही पत्रिका का सम्बन्ध वैदिकवाङ्मय के साथ-साथ वर्तमान कालिक अनेक क्षेत्रों से जुड़ा रहा और जुड़ा रहेगा। शोध क्षेत्र में सम्बद्ध क्षेत्र को अति महत्त्व देने की होड़ में उद्देश्य नीरस होता हुआ दिखाई देता है। इस नीरसता को दूर करने के लिये शोधार्थी की दृष्टि सर्वतोमुख होना अनिवार्य है। सर्वतोमुख शब्द में ही सम्बद्धता गूढ़ रूप से है। अर्थात् चिंतक की सम्बद्धता प्रत्येक विषय से होती है तथा वह परिस्थिति के अनुसार विषय परिवर्तन करता है। किन्तु यदि विषय सम्बद्धता को रूढ कर दें, तो शोधार्थी कभी भी गुप्ततम की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है। सम्बद्ध विषय में ही असकृत प्रयास मानसिक रूप से भी चिंतक को रूढ़िवादी बना सकता है।

वैदिक चिन्तन में अंगांगी भाव का निर्धारण विभिन्न शास्त्रों में तथा वैदिक संहिताओं के साथ जिस प्रकार से किया गया था। वह एक प्रबल उदाहरण है, सम्बद्धता के नाम से रूढ़ क्षेत्र निर्माण के विरोध का। अन्य क्षेत्रों पर टिप्पणी करना उचित नहीं है। किन्तु संस्कृत वाङ्मय में तो सम्बद्धता के नाम पर विषयों को संकुचित करने की प्रथा न होकर विशाल दृक्पथ को स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की आपूर्ति यह पत्रिका निरन्तर करती रहेगी।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

सौरचान्द्र पंचांग एवं अधिमास

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

हिन्दू पंचांग सौरमान एवं चान्द्र मान दोनों पर आधारित है। विश्व में यह एक मात्र पंचांग या कुछ अर्थों में कलैण्डर है जो दो मानों सौर व चान्द्र पर आधारित है। आंग्ल पंचांग सौरपंचांग है। इस कारण आंग्ल पंचांग का चान्द्रमान अर्थात् तिथि एवं चान्द्रमास से कोई सम्बन्ध नहीं है। वस्तुत: आंग्लजनों के सभी व्रत-पर्वोत्सवों का तिथ्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस कारण इनका कोई भी पर्वादि कभी पूर्णिमा को हो सकता है तो कभी अमावस्या को अथवा किसी भी अन्य तिथि को। जैसे क्रिसमस डे किसी भी तिथि में मनाया जा सकता है। परन्तु आंग्ल मासारम्भ ठीक सूर्य की संक्रान्ति को भी नहीं होता। अपितु प्राय: उससे 15 दिन पूर्व ही हो जाता है। मासों के नाम, दिनों की संख्या आदि भी यूरोपीय शासकों के इच्छानुसार निश्चित किये गये हैं, जिनमें वैज्ञानिक दृष्टि का पूर्णत: अभाव है। केवल वर्षमान लगभग 365 दिन का माना गया है। मुस्लिम पंचांग विशुद्ध चान्द्रमास पर आधारित है, जिस कारण सौरमास एवं ऋतुओं से इनका कोई सम्बन्ध नहीं रह पाता। फलत: इनके व्रत-पर्वोत्सवादि किसी भी ऋतु में आ सकते है। जैसे रमजान कभी गर्मियों में, तो कभी जाडों में तो कभी वर्षाऋतु में मनाया जाता है। इस मुख्य कारण चान्द्र एवं सौरमान में प्रत्येक वर्ष लगभग 11 दिन का अन्तर होना है। चान्द्रमान के अनुसार एक चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिन का होता है जबकि एक सौरवर्ष 365 दिन का। इस कारण प्रत्येक वर्ष मुस्लिम पर्व 11 दिन पीछे होता रहता है।

हिन्दूओं के अधिकांश व्रत-पर्वोत्सव चान्द्रमान पर आधारित हैं। चाहे जन्माष्टमी हो, रामनवमी, दशहरा, होली, रक्षाबन्धन इत्यादि। केवल सौरसंक्रान्तियों पर आधारित पर्व ही सौरमान के अनुसार मनाये जाते हैं। जैसे वैशाखी, मकर संक्रान्ति इत्यादि। यदि विशुद्ध चान्द्रमान से हिन्दुओं के व्रत पर्वोत्सव मनाये जाते तो मुस्लिम पर्वों की तरह होली कभी गर्मियों में मनायी जाती तो कभी सर्दियों में तो कभी बरसात में। अर्थात् हिन्दू व्रतपर्वोत्सवादि का भी ऋतुओं से कोई सम्बन्ध न होता परन्तु ऐसा नहीं है। होली वसन्तऋतु में, गंगादशहरा गर्मियों में, रक्षाबन्धन वर्षा में, दशहरा शरदृतु में तथा दीपावली के बाद ही प्राय: सर्दियां प्रारम्भ होती हैं। ऐसा क्यों? इसका कारण है कि हिन्दूओं द्वारा व्रतपर्वोसवादि का चान्द्रतिथ्यादि के साथ ऋतुओं से भी सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रत्येक तीन साल में अधिमास संयोजन किया जाता है, जिसे मलमास भी कहते हैं।

अधि+मास, अधि = उपसर्ग जिसका अर्थ है- ऊपर, ऊर्ध्व, अधिकता। मास = परिमाण, *मस्यते परिमीयते असौ अनेन वा।* वस्तुत: सूर्योदय के आधार पर सर्वप्रथम कालगणना प्रारम्भ हुई होगी। तत्पश्चात् चन्द्रमा के एक बार पूर्ण होने से दूसरी बार पूर्ण होने अथवा एक बार चन्द्र के न दिखाई देने से पुन: न दिखाई देने के समय को मास रूप में दूसरा कालगणना का आधार बनाया। चन्द्रमा को वेदों में मास कहा गया है-

सूर्यमासा मिथ: उच्चरात: [1]
सूर्यमासा विचरन्ता दिवि [2]

चन्द्रमा का मास नाम उपर्युक्त काल का वाचक है। चन्द्रमास का सम्बन्ध अधिमास से है। अधिमास की परिभाषा सिद्धान्त शिरोमणि में इस प्रकार कही गई है -

असंक्रान्तिमासोऽधिमास: स्फुटं स्यात्। [3]

संक्रान्तिरहित मास अर्थात् ऐसा चान्द्रमास जिसमे एक भी संक्रान्ति न पड़े। सिद्धान्त ज्योतिष में अमान्त से अमान्त तक को चान्द्रमास स्वीकार किया गया है। इसलिए जिस अमान्त चान्द्रमास के बीच में एक भी संक्रान्ति न पड़े वह मास अधिमास होता है। इसे मलमास, अधिकमास, लौंदमास, असूर्यमास आदि भी कहा जाता है। आचार्यभास्कर का कथन है कि अमान्त के बाद से संक्रान्ति के पहले तक का जो

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला - त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

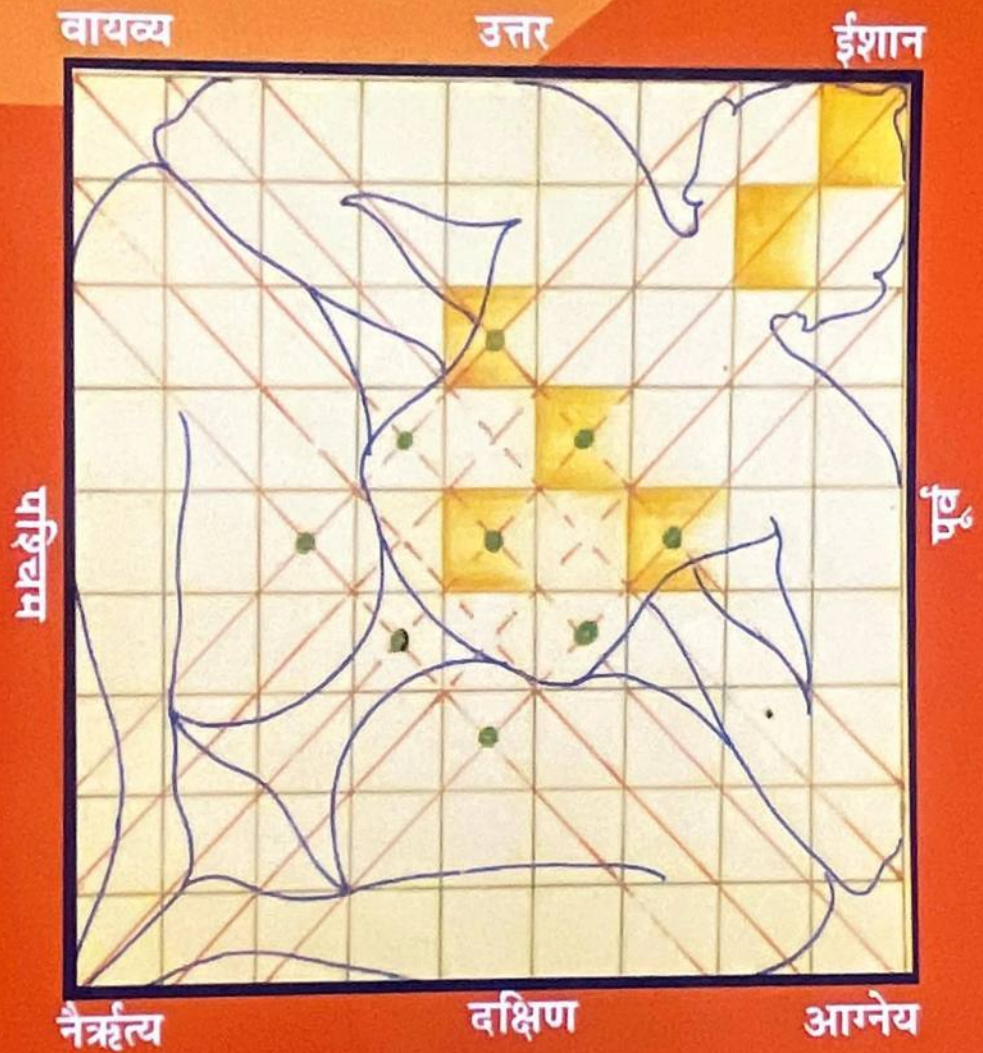

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2020
मुद्रण वर्ष - 2022

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

शोध एवं प्रकाशन समिति

१. डॉ. अशोक थपलियाल, वास्तुशास्त्र विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष
२. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी	सदस्य
३. डॉ. देशबन्धु	सदस्य
४. डॉ. प्रवेश व्यास	सदस्य
५. डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा	सदस्य
६. डॉ. दीपक वशिष्ठ	सदस्य

विषयानुक्रमणिका

1.	वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा	**डॉ. अशोकथपलियालः,** सहाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **पंकज सेमल्टी** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	1-7
2.	वास्तुशास्त्रदृष्टया बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **विनयकुकरेती ।** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	8-18
3.	व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या वास्तुशब्दावलिविचारः	**डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी** सहायकाचार्यः व्याकरणविभागः महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः उज्जयिनी, म.प्र.	19-25
4.	राजवल्लभवास्तुशास्त्रानुसारेण गृहारम्भे मासविचारः	**डॉ. प्रवेशव्यासः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **आचार्य अमितजोशी,** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	26-30

वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा

डॉ. अशोक थपलियालः
पंकज सेमल्टी

वास्तुरिति शब्दः 'वस् निवासे' धातुना तृण् प्रत्यय-योगेने निष्पन्नोऽस्ति। 'वस्तुर्वसतेर्निवास कर्मण'[1] इत्यस्यानुसारेण मनुष्यो यत्र निवसति सः वास्तुरुच्यते इति। अस्य गृह-देवालय-नगर-ग्रामादयश्च नैके भेदाः भवन्ति। मानवाः स्वरूच्यनुसारमेव स्वकीयभवनादीनां निर्माणं कुर्वन्ति। तत्र भवनादीनां निर्माणायापि वास्तुशास्त्रे शुभफलानि प्रोक्तानि -

कोटिघ्नं तृणजे पुण्यं मृण्मये दशसंगुणम्।
इष्टके शतकोटिघ्नं शैलेऽनन्तं फलं गृहे।।[2]

गृहं तृणैः निर्मितं स्यात् उत वा आरसशिलैः (संगमरमर marbles) रचितं सुन्दरं भवनम्, तस्य निर्माणस्य फलं तु गृहस्वामी प्राप्स्यत्येव। भवननिर्माणानन्तरं तस्य भवनस्य सज्जायाः अलङ्करणस्य वा प्रश्नस्तु स्वाभाविक एवास्ति। यतोहि को नाम व्यक्तिः सुन्दरं सुसज्जितं भवनं नेच्छतीति। उत्तमप्रकारेणालङ्कृतं भवनमेव रमणीयं नयनाभिरामं वा जायते। इदृशं च भवनं मानसिकशान्तिं प्रददाति। यतोहि यत्किमपि प्रसन्नतां ददाति तदेव सुन्दरता वर्तते। गृहसज्जायारपि मुख्योद्देश्यं मानसिकशान्तिरेव भवति।

सज्जेति शब्दः 'सम् + अज् + टाप्' इत्यनेन निर्मितोऽस्ति। यस्याभिप्रायो भवति- सौन्दर्यकरणमिति। वास्तुशास्त्रानुसारेण भवनादीनां निर्माणानन्तरं गृहसज्जायारत्यधिकं महत्त्वं जायते। तत्र सज्जायाः अर्थः केवलं वस्तुस्थापनेन नास्त्येव। यतोहि यदि किमपि वस्तु सुन्दरमस्ति तस्यायमर्थो नास्ति यत्तच्छोभनमपि भवेत्। अतः एतत् सज्जाकार्यमपि वास्तुशास्त्रनियमानुसारेणैव कर्तव्यम्। अन्यथा अस्याः विपरीतप्रभावोऽपि भवितुं शक्नोति।

येषां भवनानामलङ्करणं वास्तुनियमानुसारेण नैव क्रियन्ते तादृशेषु भवनेषु निवासेन मानसिकरोगाः सम्भाव्यन्ते। सार्धमेव अभ्यागतेष्वपि निकृष्टप्रभावाः आपतन्ति। गृहसज्जायाः कार्यं प्राकृतिकतत्वानां शक्तीनाञ्च सन्तुलनेन समुचितप्रबन्धनेन शास्त्रीयदृशा भौतिकसुविधानां समुच्चितव्यवस्थापनमप्यस्ति।

शास्त्रीयदृष्टिकोणे कस्याञ्चिदपि कलायां महत्त्वपूर्णं तन्निहितं सौन्दर्यतत्त्वमस्ति। तत्

---

1. निरुक्त 10/02/16
2. बृहदवास्तुमा. अ. 1 श्लो. 5

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

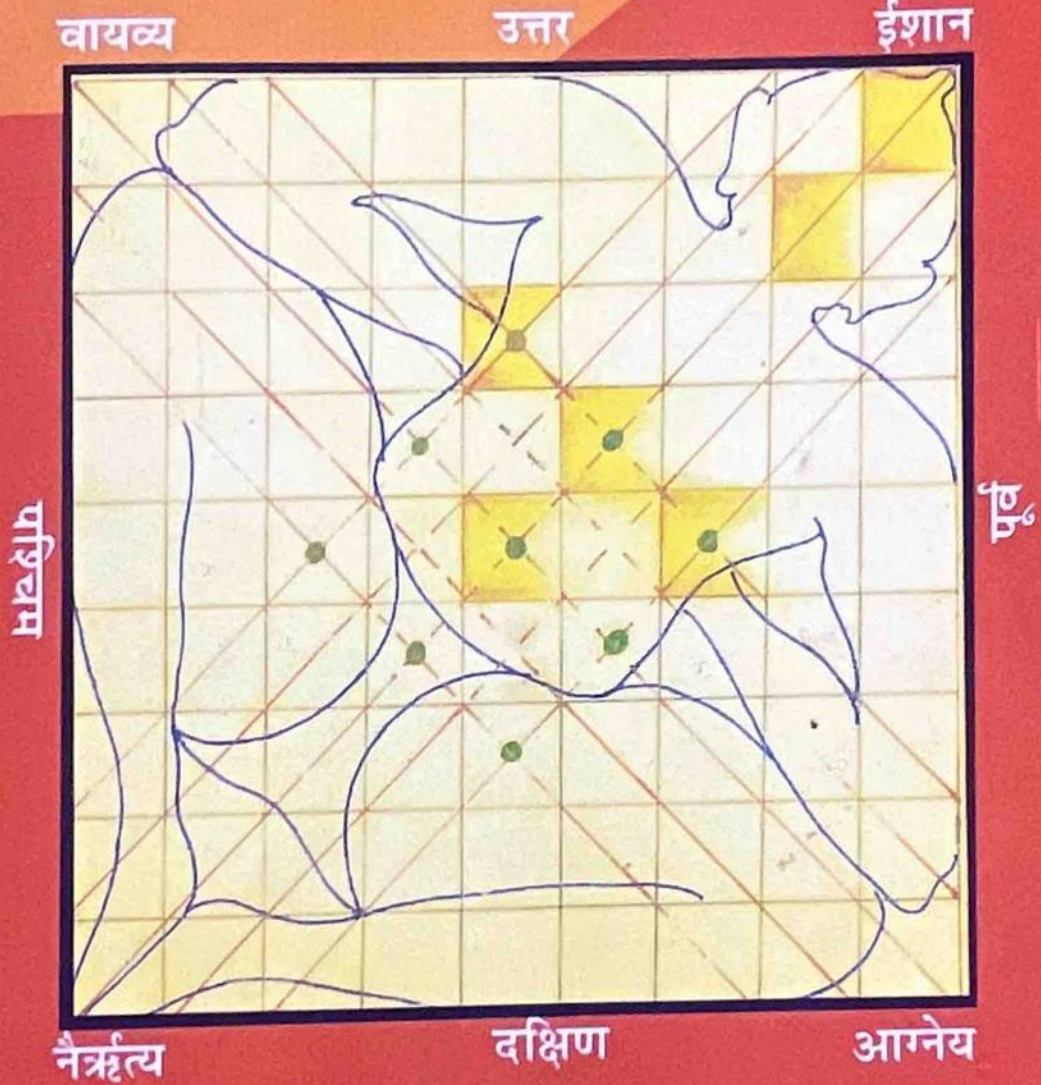

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

विषयानुक्रमणिका

1.	भारतीयवास्तुशास्त्रपरम्परा विकासश्च	**डॉ. हरिनारायणन मंकुलथिल्लाय** सहाचार्योऽध्यक्षश्च ज्योतिषविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः, तिरुवनन्तपुरम्, केरल	1
2.	वास्तुमण्डनस्य वैशिष्ट्यम्	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्योऽध्यक्षश्च वास्तुशास्त्रविभागः **केवलकुमारः,** **शोधच्छात्रः**-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	9
3.	नाट्यशास्त्रे वास्तुशास्त्रीयचिन्तनम्	**डॉ. मोहिनी अरोरा** सहायकाचार्या साहित्यविभागः **प्रणवः** **शोधच्छात्रः**-साहित्यविभागः' केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः	16
4.	देवानामायतनविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः **भूपेश आनन्दः** ' **शोधच्छात्रः**-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	31
5.	गृहनिर्माणे शल्यविचारः	**डॉ. वेदप्रकाशपाण्डेयः** ज्यौतिषाचार्यः, रा.सं. महाविद्यालयः, बयार्टू, हि.प्र.	36

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2021
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1.	भारतीयवास्तुशास्त्रपरम्परा विकासश्च	**डॉ. हरिनारायणन मंकुलथिल्लाथ** सहाचार्योऽध्यक्षश्च ज्योतिषविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः, तिरुवनन्तपुरम्, केरल	1
2.	वास्तुमण्डनस्य वैशिष्ट्यम्	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्योऽध्यक्षश्च वास्तुशास्त्रविभागः **केवलकुमारः,** शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	9
3.	नाट्यशास्त्रे वास्तुशास्त्रीयचिन्तनम्	**डॉ. मोहिनी अरोरा** सहायकाचार्या साहित्यविभागः **प्रणवः** शोधच्छात्रः-साहित्यविभागः' केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः	16
4.	देवानामायतनविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः **भूपेश आनन्दः** ' शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	31
5.	गृहनिर्माणे शल्यविचारः	**डॉ. वेदप्रकाशपाण्डेयः** ज्यौतिषाचार्यः, रा.सं. महाविद्यालयः, क्यार्टू, हि.प्र.	36

वास्तुमण्डनस्य वैशिष्टयम्

डॉ. अशोकथपलियालः, केवलकुमारः

सूत्रधारमण्डनेन विरचितेषु ग्रन्थेषु शिल्पविद्याविषयकेषु वास्तुमण्डनमेका प्रसिद्धा रचना वर्तते। ग्रन्थस्यास्य कालः चतुर्दश-शताब्द्या उत्तरार्धो वर्तते। परन्तु अयं ग्रन्थः प्रकाशनाभावात् एकोनविंशति शताब्द्यां समुपलभ्यते। ग्रन्थेऽस्मिन् अष्टौ अध्यायाः सन्ति। तत्र वर्णितानां विषयाणां विवेचनं यथाक्रमेण क्रियते। सर्वप्रथमं शङ्का भवति यद् अस्य ग्रन्थस्य लोकोपयोगिता प्रयोजनञ्च किमिति? तर्हि स्वयमेव आचार्यः सूत्रधारमण्डनमहोदय इत्याह-

वास्तुवेदोदधेः किञ्चित्सारमादाय मण्डनः।
बालानामवबोधाय तनुते वास्तुमण्डनम्।।

अत्र च बालानामुपकारकत्वेऽपि तत्र लोकोपकारित्वं कथम्? इत्यत्र अपरस्मिन् श्लोके गृहारम्भस्य प्रवेशपद्धतिवर्णनावसरे निगदितवान्-

शस्तमासे सिते पक्षे चातीते चोत्तरायणे।
चन्द्रताराबले भर्त्तुः सुलग्ने च शुभे दिने।।[1]

वास्तुमण्डने वर्णिताः योगाः-

कस्यचिदपि कार्यस्यारम्भे ग्रहयोगानां चिन्तनं क्रियते स च योगः कार्यसाफल्याय साहाय्यं करोति। यदि अनिष्टे ग्रहयोगे नूतनकार्यस्य प्रारम्भः क्रियते चेत् कार्यस्य नाशोऽपि जायते, अतः सः योगः त्याज्यो भवति। अथ च के योगाः त्याज्याः के च स्वीकर्त्तव्याः इत्यत्र वास्तुसारमण्डनकारः कथयति त्याज्ययोगान् आदाय यथा-

मुसलः सप्तमी भानौ संवर्त्तकः प्रतिपद् बुधेः।
कर्कस्त्रयोदशाङ्के स्याद्वारतिथ्योस्त्रयं त्यजेत्।।[2]

सप्तम्यां तिथौ यदि रविवासरो भवति तदा मुसलयोगः यदि प्रतिपत्तिथौ बुधवासरश्चेत् संवर्तकयोगः एवमेव कर्कलग्नं त्रयोदशी च शुभकार्यस्य कृतेऽनिष्टकारकं भवति अत एते त्याज्याः। तथैव यमघण्टकयोगः कदा भवति इत्यत्र आह वास्तुमण्डनकारः

विशाखार्द्रामूलं कृत्तिका रोहिणीकरः।
अशुभोऽर्कादिवारेषु यमघण्टः प्रजायते।।

यदा मघा-विशाखा-आर्द्रा-मूल-कृत्तिका-रोहिणी-हस्तनक्षत्राणि क्रमेण रवि-सोम-भौम-

---

1 वास्तु.म. 1/3

2 वास्तुमण्डनम् 1/9

UGC - CARE LISTED

ISSN-2321-7626
Vol. XXXIII, Year X
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ

त्रैमासिक - सान्दर्भिक - पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृत-एवं-वैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

UGC - CARE Listed

Vol. XXXIII, Year X
ISSN-2321-7626
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ

त्रैमासिक-सान्दर्भिक-पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः
देवासमार्गः, उज्जयिनी, मध्यप्रदेशः, भारतम्

अणुसङ्केतः (E-mail) - mpsvv.paniniya@gmail.com
अन्तर्जालपुटम् (Website) - www.mpsvv.ac.in

प्रधानसम्पादकः
प्रो. विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

प्रबन्धसम्पादकः
डॉ. तुलसीदासपरौहा
सह आचार्यः विभागाध्यक्षश्च
संस्कृतसाहित्यविभागः

सम्पादकः
डॉ. शुभम् शर्मा
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
ज्योतिष-एवं-ज्योतिर्विज्ञानविभागः

सहायकसम्पादकाः

डॉ. पूजा उपाध्यायः
सहायकाचार्या
विशिष्टसंस्कृतविभागः

डॉ. अखिलेशकुमारद्विवेदी
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

डॉ. उपेन्द्रभार्गवः
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
योगविभागः

डॉ. संकल्पमिश्रः
सहायकाचार्यः
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

प्रकाशकः
कुलसचिवः
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

सदस्यताशुल्कम्

वार्षिकम् - 3000/-
मूल्यम् - 725/- डाकव्ययः 50/-

अनुक्रमणिका

	शुभकामना संदेश	iii
	कुलपतिसन्देशः	v
	सम्पादकीयम्	vi
	संस्कृत - प्रभागः	
1.	दृग्दृश्यविवेकः एकं ससामान्याध्ययनम् **- डॉ. के. रतीष्**	1
2.	वैदिकयुगे सभा समितिश्च **- डॉ. अविनाशगायेनः**	6
3.	वीणापाणिपाटनीप्रणीतायामपराजितेति लघुकथायां प्रतिविम्बिता नारीसमस्या **- श्रीशशांकशेखरपात्रः**	12
4.	वैदिकार्षस्मृतिवाङ्मयेषु संन्यासाश्रमविमर्शः **- डॉ. श्रुतिकान्तपाण्डेयः**	19
5.	शब्दस्य पृथक् प्रमाणत्वविचारः **- डॉ. अजीमोन सी.एस.**	25
6.	चम्बाजनपदस्य स्थापत्यकलायाः परिचयः **- सन्तोषकुमारः,** **- डॉ. देशबन्धुः**	30
7.	वैदिककालीनऋषिसंस्कृतिः - तस्य च पुनः प्रतिष्ठापनाय वेदाश्रयत्वम् **- जयश्री पाल**	38
8.	अभिनवभारत्याः रीतिशास्त्रसङ्केताः, तन्त्रयुक्तयश्च - समन्वयः, समीक्षा च **- आर्या ए. वर्मा**	43
9.	वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा **- पंकज सेमल्टी** **- डॉ. अशोक थपलियाल**	49
10.	शाब्ददर्शनदृष्ट्या शब्दस्वरूपविमर्शः **- एकराजपौडेलः**	55

वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा

पंकज सेमल्टी*, डॉ. अशोक थपलियाल**

शोधसारः - भारतीयपरम्पराया मूलम्भजन्तो वेदा महर्षिणा धृतधर्मनेत्रेण भगवता परमकारुणिकेन बादरायणेन शिष्यहितनिमित्तैकभूतेन चतुर्षु भागेषु विभक्ताः। वेदनाम्ना प्रथितेष्वमीषु शास्त्रेषु धर्माधर्मौ, नयापनयौ, पापपुण्ये, सुकृतदुष्कृते, विचाराचाराहारविहाराशनवसनभवनादीनां सर्वेषामपि मौलिकतत्त्वानां वा तत्त्वानाञ्ज्ञानविज्ञानोहापोहादीनां वा सकलशास्त्रप्रवेशनिमित्तभूतानान्त-त्त्वानाम्भौतिकानां वा पदार्थानां संकलनं कृतम्। वेदेष्वमीषु च गृहस्य गृहप्रकाराणां ध्वनिशक्तया गृहसज्जानिमित्तं मौलिकाः पदार्थाः सङ्केतिता वर्तन्ते। ऋग्वेदकाले गृहस्यान्तःपुर एव पृथक्पृथग्गृहस्य शोभां वर्धयन्त्योऽग्निशालाः पशुशालाश्चावर्तिषत। गृहसज्जाविचारावसरे गृहे कक्षस्यातितराम्महत्त्वमाद्रियते तथा च कक्षोऽपि गृहस्य शोभाधायकतया वर्तते। तत्र यूपनिर्माणं स्तूपनिर्माणम् आसन्दिकापर्यंकादिनिर्माणं च विस्तरेण वर्णितमस्ति। अनेन प्रकारेण वेदेषु गृहसज्जाविषये विशदचर्चा समुपलभ्यते। प्रस्तुतशोधपत्रे वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा प्रदर्शिता अस्तीति।

शब्दकुंजिकाः - नयापनयौ - नीतिः अनीतिश्च, वाङ्मये-साहित्ये, परेषाङ्गृहे-अन्यजनानां गृहे, धनधानी - कोषः धान्यगृहं वा, त्रिवरुथगः/ त्रिभुजशयानः/ त्रिधातुशर्मनः- वैदिककाले त्रिभूमिकागृहस्य संज्ञा, यूपः- स्तंभः, स्तूपः - मृतिकादिभिः निर्मित उच्चाकृतिविशेषः (टीला), स्थूणः- स्तम्भः, छदिस्- छत इति हिन्दी भाषायां, तितउना - चलनी इति हिन्दी भाषायां, मृण्मये-मृतिकाभिः निर्मिते।

*शोधछात्र, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री ला.ब., शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली
**सहाचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री ला.ब., शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली

UGC CARE List (Arts and Humanities) RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्तराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and
UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - दशमम् अङ्कः - विंशतिः जूनमासः - 2023

प्रधानसम्पादकः
प्रो० दिनेशचन्द्रशास्त्री
कुलपतिः

सम्पादकः
डॉ. अरुणकुमारमिश्रः

सहसम्पादकः
श्रीमतिमीनाक्षीसिंहरावतः

प्रकाशकः
उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

Śodha-prajñā

UGC CARE Listed (Arts and Humanities)
(Half-Yearly, International Refereed & Peer Reviewed Research Journal of Uttarakhand Sanskrit University)

Chief Editor : Prof. Dinesh Chandra Shastri

Editor : Dr. Arun Kumar Mishra
Co. Editor : Smt Meenakshi Singh Rawat

Editors
Prof. Dinesh Chandra Chamola
Dr. Kamakhya Kumar
Dr. Harish Chandra Tiwadi
Dr. Vinay Sethi
Dr. Ajay Parmar
Dr. Suman Prasad Bhatta
Dr. Kanchan Tiwari
Sh. Sushil Chamoli

Reviewer
Prof. Upendra Kumar Tripathi
Prof. Ranjan Kumar Tripathi
Dr. Pratibha Shukla
Dr. Shailesh Kumar Tiwari
Dr. Bindumati Dwivedi
Dr. Ved Vrat
Dr. Arun Kumar Mishra

Managing Editor
Shri Girish Kumar Awasthi

Finance Controller
Shri Lakhendra Gothyal

We are bound to grant an international platform for researchers in the area of Sanskrit Studies. We welcome the papers related to Sanskrit Studies including all the fields like veda, Vedic Sahitya, Darshan, Sanskrit Poetics, Sanskrit Literature, Sanskrit Grammar. Epics, Puranas, Jyotish, Comparative literature, Interdisciplinary and Oriental Studies. We would like to encourage papers related to Ancient Indian Sciences and Philosophy.

We invite authentic, scholarly and unpublished research papers for publication. Research papers submitted for publication will be evaluated by the refrees of the Journal and only those which receive favourable comments, will be published and the author will be informed.

RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9892
© Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar, Uttarakhand, India
Subscription Charges
Rs. 500/- Single copy Rs. 1000/- Annual Rs. 5000/- Five Years

The views expressed in the publication are the individual opinion of the author(s) and do not represent or reflect the opinion of the Editor and Editorial board nor subscribe to these views in any way. All disputes are subject to jurisdiction of the District Court Haridwar, Uttarakhand only.

Editor-In-Chief
For Subscription and related enquiries feel free to contact :
The Managing Editor
Śodha-prajñā
Uttarakhand Sanskrit University
Bhadrabad, Haridwar - 249402
(Uttarakhand) India.

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	डॉ. निरञ्जनमिश्रस्य गङ्गापुत्रावदाने प्रकृतिचित्रणम्	डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः	1
2.	शैलीस्तम्भस्य श्रीमद्भगवद्गीतायाश्लोके काव्यात्मबोधविचारः	डॉ. कंचन तिवारी	8
3.	नाट्यमण्डपनिर्माणे वास्तुविमर्शः	डॉ. नीरजतिवारी	12
4.	सर्वाधरपत्नोक्षणे यज्ञः	प्रो. हनुमानमिश्रः	19
5.	शाब्दिकनये समासशक्तिविमर्शः	आशुतोषकाला	23
6.	शास्त्रीयदृष्ट्या देवतानामनुशीलनम्	अरुण ममगाँई	29
7.	श्रीभार्गवराघवीयमहाकाव्यधिया वत्सलरसविवेचनम्	अभिषेक परगाँई डॉ. कंचन तिवारी	34
8.	श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थवेणुभ्रमरगीतयोः समासविश्लेषणम्	शान्तिप्रसादमैठाणी डॉ. राकेशकुमारसिंहः	40
9.	अनूदितसंस्कृतसाहित्ये स्वामिविवेकानन्दस्य अवदानम्	डॉ. सुनीतावर्मन	44
10.	संस्काराणां वैशिष्ट्यम्	डॉ. चन्दनकुमारमिश्रः	50
11.	वैदिकसाहित्ये प्रणवस्वरूपम्	डॉ. अमन्दमिश्रः	54
12.	वैयाकरणाभिमतोपपदपञ्चमीविभक्त्यर्थविचारः	डॉ. मनीषशर्मा	58
13.	शब्दार्थसम्बन्धनित्यत्वम्	हर्षितमिश्रः	61
14.	वैदिकसाहित्ये प्रबन्धनस्य मूलम्	डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः	70
15.	वेदाङ्गेषु गृहसञ्ज्ञायाः प्रसंङ्गाः	डॉ. अशोकथपलियालः पंकजसेमल्टी	73
16.	अलङ्कारशास्त्रदिशा अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रस्य सूत्रवृत्त्युदाहरणानाम् अध्ययनम्	प्रियांकाबारिकः	79
17.	रुद्रसंहितान्तर्गतसृष्टिखण्डेषु कृत्यप्रत्यानां विमर्शः	सुशीलकुमारनौटियालः डॉ. राकेशकुमारसिंहः डॉ. अरुणकुमारमिश्रः	83
18.	शिक्षायां निर्मितिवादोऽधिगमश्च	डॉ. सुमनप्रसादभट्टः	86
19.	संस्कृत साहित्य में भक्ति का महत्व	डॉ. अमित भार्गव	92
20.	मनुस्मृति एवं कौटिल्यीय अर्थशास्त्र में शिक्षा का स्वरूप	प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी	95
21.	काव्यशास्त्रीय परम्परा एक अवलोकन	डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय	102
22.	वैदिक चिन्तन एवं वैश्विक कल्याण भावना	डॉ. अरुण कुमार मिश्र	108
23.	प्राचीन भारत में वर्ण-कर्मानुसार आवास योजना की सकल्पना का समीक्षात्मक अधययन	डॉ. मौहर सिंह मीना अनुराधा	111

वेदांङ्गेषु गृहसज्जायाः प्रसंङ्गाः

डॉ. अशोक थपलियालः
सहाचार्य,वास्तुशास्त्र विभागः,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि. नवदेहली-१६
पंकज सेमल्टी
शोधछात्रः, वास्तुशास्त्र विभागः
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि. नवदेहली-१६

वेदानामर्थस्फुरणाय वेदार्थम्प्रति जिगमिषूणाञ्जिगमिषावृद्ध्यै क्लिष्टभूतानामर्थानां सरलरीत्या यथा बोधस्यात्तदर्थम्महर्षिभिश्श्रुतिवर्त्मानुसरणशीलैर्वेदाङ्गानां कल्पना विहिता। वस्तुतः ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः न तु कर्तारः। दृष्ट्याअनुभूत ज्ञानस्यप्रकटनं स्ववाण्या स्वल्पशब्देषु च ऋिषिभिः कृतम्। तैः स्वशिष्येभ्य वेदज्ञानं प्रदत्तम्, स्वल्पशब्देषु रचितानां वेदानां भावावबोधः कालान्तरेण दुष्करोः जातः। अतः वेदाङ्गानि प्रवृत्तानि तद्यथा। उपनिषत्सु वेदाङ्गानां सङ्ख्या षडिति विश्रुतपूर्वा। प्रायेण पाणिनीयशिक्षाया श्लोकोऽसौ प्रकृतविषये सर्वख्यातो वर्तते। पाणिनीयशिक्षायां षण्णां वेदाङ्गानान्तदन्वेतेषां किमङ्गत्वमित्यपि ग्रन्थकारेण स्फुटीकृतं वर्तते। पाणिनीयशिक्षाकारमते छन्दश्शास्त्रम्पादो वर्तते, कल्पशास्त्रमदो हस्तो वर्तते, ज्योतिषाङ्गणनाधारभूतं लगधप्रवर्तितं शास्त्रं नयनं वर्तते, ध्वनिग्रहणनिमित्तभूतङ्कर्णं वेदशास्त्रस्य च निरुक्तशास्त्रं वर्तते, गन्धग्रहणतत्परं यथास्माकं नासिका तद्वदेव वर्णोच्चारविधेर्नियामकं शिक्षाशास्त्रं घ्राणत्वनोरीकृतं वर्तते, प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु सर्वेषामेव शास्त्राणां मौलिकं मुखाङ्गभूतं व्याकरणशास्त्रमस्ति। एवम्प्रकारेण वेदानामर्थस्फोटकारीण्यमूनि षडङ्गानि राजन्तेतमाम्। षट्सु वेदाङ्गेषु यथाङ्गं विषया समलङ्कृता वर्तन्ते। वेदानामेव नापितु सकलमानवजनकल्याणनिमित्तैकभूता विषया अपि प्रकृताङ्गेषु दृश्यन्तेतराम्। मुख्यम्प्रतिपाद्यं वेदत्वादितरे विषया सङ्ःकेतेनैव निर्दिष्टा आहोस्विद्विस्तरभिया सङ्क्षेपेणोपस्थापिता।

छन्दः

छन्दःसंस्कृतबगत्याम्भवत्वन्यासु संस्कृतिषु भाषासु वा भवत्वेकं महत्वपूर्ण वेदाङ्गभूतं वर्तते यो लौकिकानपि रसयतीव दृश्यते। छन्दो लयबद्धानामक्षराणामाधारे निर्धारितम्भवति। छन्दो नाधुनिकैः परिष्कृतमपित्विदं वैदिककालादेवर्षिभी रञ्जितमेकं समस्ताक्षरनियमनमनोविनोदात्मकमक्षराधारितं शास्त्रम्भवति। वेदस्यापौरुषेयस्य षट्स्वङ्गेष्विदञ्छन्दः पादपन्निगदितम्। छन्दःशास्त्रस्यामुष्य प्रवर्त्तको नियामकःपिङ्गलनामधेय कश्चिदृषिवत्पुरुषो विदितः। अथास्य कृतिश्छन्दश्शास्त्रमिति संज्ञयोच्यते। अस्यापरमभिधानम्पिङ्गलशास्त्रमपि विद्वद्भिर्व्याहियते। श्रुतिषुच्छदसां नैके नियमाःसर्वतन्त्रस्वतन्त्रतया भ्राजन्ते। श्रौतच्छन्दसाङ्गणनापि श्रुतावेव द्रष्टुं शक्यते।

कल्पः

कर्मकाण्डस्य विविधकर्मणां नियामकमिदं शास्त्रं वेदाङ्गेष्वेकं वर्तते।कल्पशब्दस्य च विधिरर्थो वर्तते। विग्रहश्च कल्प्यते विधीयते असौ इति भवति। कल्पशास्त्रस्य प्रतिपाद्यविषयेषु प्राधान्येन यागाः संस्काराश्च कथिताः। कल्पशास्त्रं चतुर्षु विषयेषु व्यस्तं वर्तते। ते च चत्वारो विषयाः-श्रौतगृह्यधर्मशुल्बाख्याः। प्रायेण आदिमास्त्रयो विषयाः सर्वेषां वेदानां प्राप्यन्ते परं शुल्बेति विषयः यजुःसंहितायामेव प्रशस्तो वर्तते। वैदिकविषयैस्सार्धममीषु कल्पेषु गृहसम्बद्धा विषया अपि चर्चितासन्ति। यज्ञवेदीनिर्माणे बोधायन-आपस्तम्ब- कात्यायनशुल्वसूत्राणां तथा च भूमिचयन-भूशोधन-भूमिपूजनादिके शांखायन-पारस्कर-आश्वलायनगृह्यसूत्राणां महत्त्वमस्ति। गृह्यसूत्रेषु गृहस्य तथास्य सज्जायां प्रयुञ्जानानां वस्तूनां सङ्केतोऽत्र लभ्यते। गृहस्य बहिः यज्ञशालाया निर्माणं कर्त्तव्यमिति सङ्केतोऽत्र पारस्करगृह्यसूत्रे प्राप्यते। षोडशसंस्कारेषु विवाहसंस्कारस्य, मुण्डनस्य, यज्ञोपवीतस्य, केशान्तस्य, सीमन्तोन्नयनस्य विधिर्गृहबहिर्निर्मितेनाग्निकुण्डादग्निमादायैव सम्पादनं कर्तव्यम् इत्युपदेशो वर्तते। अतः गृहसज्जाविचारावसरे गृहस्य बहिर्यज्ञशाला निर्मातव्या भवति। गृहे आसनानां निर्माणं कृत्वा गृहसज्जा सम्पादनीया

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 2 मई - जून 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

International day of yoga 21st June

Yoga for Harmony & Peace

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

डॉ. रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - DR. ROHIT PACHORI*

ISSN 2278 - 0327

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्वप्राचार्य-केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष-तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
निदेशक- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. श्रीगोविन्द पाण्डेय
आचार्य- शिक्षाशास्त्रविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, **संत आशाराम नगर,**
फेज - 3, **लहारपुर,**
भोपाल - 462043, **मध्यप्रदेश**
Web : www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

सम्पादकीय

भारत की वास्तविक परम्परा आज भी गाँवों में देखने को मिलती है। अभी भी वास्तविक भारत गाँवों में ही बसा है। हैन्दव परम्परा का प्रत्येक कार्य शुचि और शुभ्रता पर ही आधारित होते हैं। भोजन निर्माण व भोजन करते समय परिपालित स्वच्छता, आंगन को गोमय से लेपित करने की परम्परा, आंगन में औषधगुणयुक्त तुलसी से अलंकृत करने की प्रथा, घर के चारों ओर औषधयुक्त वृक्षों को बढ़ाने का प्रकृतिप्रेम तथा शुभ्रता के प्रति निष्ठा भारत की जीवनशैली में अनादि से ही देखने को मिलती है जो आज ढोंग तथा अनुकरण में धीरे-धीरे लुप्त होती नजर आ रही है।

वर्तमान स्वच्छभारत अभियान किसी समय भारत का ही पर्याय हुआ करता था। घर के कार्य देखने वाली गृहिणी से लेकर नौकरी पेशा गृहस्वामी तक जो आचार व्यवहार हुआ करते थे वे स्वच्छता के प्रतीक ही होते थे।

धर्म के लिये राम को, कर्म के लिये कृष्ण को, भक्ति के लिये प्रह्लाद को सतीत्व के लिये सावित्री को, दान के लिये कर्ण को, शिष्य के लिये एकलव्य को, काव्य के लिये कवि वाल्मीकी को स्मरण करने वाले भारतवासी को आजादी के लिये उन अमर वीरों को याद करने के लिये कहने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु स्वाभिमान तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं जागृति के गिरते आंकड़े आज कुरबानियों को याद करने के लिये बोलने को विवश कर रहे है।

हे! संस्कृत एवं संस्कृति के उपासक! जागो और अपने वास्तविक प्राचीन रूप को धारण कर लो। भारतवासी जैसे रहना प्रारम्भ करो। स्वच्छता तथा स्वराज्य एवं स्वराष्ट्र के प्रति तुम्हारे खून में घुले हुये वे प्राचीन तत्त्व अपने आप जागृत हो जायेंगे। तुम भारतीय हो। अन्दर निक्षिप्त उस भारतीयता को जगाओ।

हम कभी ईर्ष्या और द्वेष पर आस्था नहीं रखे हैं। विश्व को एक नीड मानने वाले महान उदारता, सब को एक समान देखने की महान क्षमता केवल भारतवासी का ही विशेष गुण है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। यह उक्ति गाने के लिये नहीं जीने के लिये है। पहली वरीयता राष्ट्र को।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	मन्दिरस्थापत्यानुशीलन	डॉ. अशोक थपलियाल	05
2.	सरकारी विकास योजनाओं का ग्रामीण समाज में प्रभाव	डॉ. हरिन्द्र कुमार	11
3.	वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन की भूमिका	डॉ. समाप्ति पौल	15
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्वामी जी का शिक्षा दर्शन	डॉ. सोमा सरकार	20
5.	भारतीय सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्था द्वारा कार्यात्मक परिवर्तन एवं पणधारकों से सक्रिय सम्पर्क के सकारात्मक प्रयास	डॉ. सुप्रिया शर्मा	25
6.	भारतीय समाज में भाषायी वैविध्य : नव शब्द सृजनता का आधार	डॉ. योगेन्द्र बाबू , डॉ. हरीश पाण्डेय	30
7.	समकालीन राजनीति और अखिलेश की कहानियाँ	पंकज कुमार	33
8.	संपोषणीय विकास में पारितंत्र-अध्यात्म की खादी एवं गांधी दृष्टि	छविनाथ यादव, अंकित कुमार पाण्डेय	37
9.	दार्शनिक चिंतक पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का समाज पर प्रभाव	अनुराग सिंह	41
10.	वर्तमान भारतीय परिवेश में महिलाओं की बदलती स्थिति	डॉ. सुनीता सिंह	45
11.	भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों की भूमिका	अमित सिंह	47
12.	नरेन्द्र सिंह नेगी के गढ़वाली गीतों में अभिव्यक्त नारी चेतना	नवनीत	52
13.	डिजिटल इंडिया: साकार होती भारत की परिकल्पना	कु. प्रगति पान्डेय	57
14.	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला	63
15.	भारत में समावेशी शिक्षा एवं सतत विकास लक्ष्य : एक अध्ययन	डॉ. राजेश्वरी गर्ग, राजन पटैल	66
16.	वैश्विक महामारी दौरान जन स्वास्थ्य बनाये रखने में नागरी प्राथमिक आरोग्य केंद्रों की भूमिकाओं का अध्ययन	प्रेमकुमार नाईक, डॉ. के. बालराजु	70
17.	वर्तमान समय में यकृत से संबंधित समस्याओं का यौगिक उपचार	मोनिका आनंद, डॉ. राकेश गिरी, डॉ. ऊधम सिंह	74
18.	महिलाओं के आर्थिक विकास में स्वयं समूहों की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	राज कुमार सिंह गौर	77
19.	पर्यटन के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन	निकेता सिंह	80
20.	योग एवं आयुर्वेद का अंतर संबंध : एक विवेचना	आरती कुमारी, डॉ. अभिनव, डॉ. पूजा वर्मा, प्रो. जे.एस. त्रिपाठी	85
21.	नई शिक्षा नीति 2020: एक शैक्षिक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	89
22.	महिलाओं के विरुद्ध हिंसा : एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ. हसन बानो	94
23.	राष्ट्रवाद व विवेकानन्द	डॉ. अर्चना चौहान	99
24.	मुरादाबाद महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी मानसिक सुरक्षा पर प्रभाव का अध्ययन	अजय गौतम, प्रो. (डॉ.) राजकुमारी सिंह	103
25.	आदिवासी समुदाय में विद्यालय के परित्याग की समस्या सम्बन्धि अध्ययन - झारखण्ड के हो जनजाति के सन्दर्भ में	डॉ. शशिकान्त यादव	106
26.	भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वाणिज्य	ओम प्रकाश, डॉ. हरीश पाण्डेय	109
27.	हरियाणा में महिलाओं के प्रति बढती आपराधिक प्रवृतियों का एक भौगोलिक अध्ययन	दीपक दलाल, प्रोफेसर (डॉ.) अत्तर सिंह	113
28.	ग्रामीण गरीबी उन्मूलन हेतु मनरेगा एक लोकनीति योजना के रूप में कार्यान्वयन का एक अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के खरथुली ग्राम पंचायत के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. राम बाबू	116
29.	दूधनाथ सिंह की संस्मरणात्मक आलोचना : निराला के संदर्भ में	शिव कुमार मेहता, डॉ. सुनील कुमार दुबे	124

ISSN 2278 - 0327

मन्दिरस्थापत्यानुशीलन

डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य- वास्तुशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

भारतीय स्थापत्य की विलक्षण शिल्पकला का दिग्दर्शन मन्दिरों में प्राप्त होता है। *मन्द्यते सुप्यतेऽत्र मन्दिरम्* [1] अर्थात् जहाँ पर विश्राम किया जाता है या सोया जाता है, उसे मन्दिर कहा जाता है। अत: कक्ष, गृहादि को भी मन्दिर कहते हैं। जैसे कि तुलसीदासजी श्रीरामचरितमानस में सीता की खोज में हनुमान जी द्वारा लंका में भ्रमण करने का वर्णन करते हुए कहते हैं-

मन्दिर मन्दिर करि प्रतिसोधा।
देखें जहँ तहँ अगनित जोधा।
गयउ दसानन मन्दिर माहीं।। [2]

इसी प्रकार *मन्द्यते स्तूयते वा मन्दिरम्* [3] अर्थात् जहाँ पर स्तुति की जाती है, मन्दिर कहलाता है। व्याकरणशास्त्र के अनुसार मदि *ङस्वप्ने जाड्ये मदे मोदे स्तुतौ गतौ नाम्नीति इर:* [4] करने से मन्दिरशब्द व्युत्पन्न होता है। साररूप में कहें तो ऐसा स्थान, जहाँ विश्रान्ति प्राप्त हो, प्रसन्नता हो, स्तुति की जा सके, गतिशील हो, वह मन्दिर है। इसको मन्दिर, देवालय, देवायतन, देवस्थान, देवनिकेतन, देवप्रासाद आदि विभिन्न नामों से भी पुकारा जाता है।

परब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति अथवा मोक्षप्राप्ति के मुख्यत: तीन मार्ग कहे गये हैं- ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग एवं भक्तिमार्ग।[5] इनमें भक्तिमार्ग पर चलने में सहायक उपकरण के रूप में मन्दिर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। मन्दिर केवल देव का निवास मात्र नहीं है अपितु साक्षात् देवस्वरूप ही है। अत: अग्निपुराण में कहा गया है-

प्रासादं पुरुषं मत्वा पूजयेन्मन्त्रवित्तम:।
एवमेव हरि: साक्षात् प्रासादत्वेन संस्थित:।[6]

मन्दिर के इस मानवदेहीरूप की कल्पना दो प्रकार से प्राप्त होती है- प्रथम ऊर्ध्वाधर या खड़े हुए (Vertical) रूप में जहाँ जगती पैर, उसके ऊपर जंघारूपी अधिष्ठान, जिस भाग से गर्भगृह के अन्दर का भाग परिलक्षित हो वह कटि, मन्दिर के अन्दर का भाग उदर तथा देवालय का शिखर ही शिर होता है। द्वितीय क्षैतिज या लेटे हुए (Horizontal) रूप में गोपुर पाँव, सभामण्डप उदरभाग तथा गर्भगृह मुखभाग होता है। इन दोनों प्रकार की कल्पना के आधार पर देवालय की निर्मिति दो प्रकार से प्राप्त होती है- तलच्छन्द एवं ऊर्ध्वछन्द।

1- **तलच्छन्द**- प्रवेशद्वार से गर्भगृह तक का लम्बा मन्दिर।

2- **ऊर्ध्वछन्द**- जगती से प्रारम्भ कर शिखर तक लम्बा मन्दिर। अत: मन्दिर केवल भवनमात्र नहीं है अपितु अमूर्त परमेश्वर का प्रत्यक्षमूर्तरूप सकारात्मक ऊर्जाकेन्द्र भी है। इसी कारण प्रभु के प्रतीकस्वरूप मूर्ति के दर्शन पूजनादि के साथ ही देवालय की प्रदक्षिणा का भी विधान है। मन्दिर के शिखर दर्शन को भी जनमानस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विचार करें तो वैदिकयुग में मन्दिरों का प्रचलन लगभग नहीं दिखता है क्योंकि उस समय ज्ञानमार्ग एवं कर्ममार्ग उपासना के मुख्य आयाम थे। उस समय स्तुति, यज्ञ एवं चिन्तन का अधिक महत्व दिखता है। यज्ञ के लिए यज्ञकुण्डों का निर्माण प्रमुखता से होता था। ये ही यज्ञकुण्ड मन्दिरवास्तु का मूल है। यज्ञवेदीमण्डल का ही परिष्कृतरूप मन्दिर है। पौराणिक युग में प्रतिमा पूजन का विशिष्ट महत्व मिलता है, जिस कारण उस काल में भारत में अनेकों मन्दिरों का निर्माण हुआ। पतंजलि भी देवप्रासाद का निर्देश करते हैं [7]। मयमतग्रन्थ में सभा, शाला, प्रपा, रंगमण्डप और मन्दिर को पंचविध प्रासाद कहा गया है।[8] गुप्त, पल्लव, चोल, पाण्ड्य, राजपूत आदि वंशों के राजाओं ने अनेकों मन्दिरों का निर्माण करवाया। अब प्रश्न उठता है कि किस कारण से भारत के प्रत्येक नगर एवं ग्राम में मन्दिरनिर्माण की पुरातनी व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए मन्दिरों के महत्त्व को जानना आवश्यक है। मन्दिरों के महत्त्व को निम्नप्रकार से कहा जा सकता है-

- **सांस्कृतिक महत्त्व** - मन्दिर सांस्कृतिक चेतना के प्रतीकस्वरूप हैं। संस्कृति के अन्तर्गत हमारी उपासना पद्धति, पारम्परिक रीतियाँ, संस्कार, खान-पान, भाषा, वेश-भूषा इत्यादि आते हैं। मन्दिर में देवप्रतिमा, भित्ति-आलेखन, पूजनपद्धति इत्यादि प्राय: संस्कृति के विभिन्न रूपों को ही परिलक्षित करती है।
- **ऐतिहासिक महत्त्व**- भारत में बहुत से मन्दिर अत्यन्त प्राचीनकाल से विद्यमान हैं, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी है। इन मन्दिरों पर उत्कीर्ण शिलालेख, दानपत्रादि के द्वारा अनेक अज्ञात राजवंशों, महात्माओं, ज्ञानीपुरुषों, दानदाताओं, स्थपतियों आदि के विषय में पता चला है। कई मन्दिरों के ध्वंसावशेष प्राचीन गौरवगाथाओं का गान करते हैं। इनका संरक्षण ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को संजोये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2022
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है। शोधलेखों में लेखकों के स्वयं के विचार हैं। शोधलेख में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर शोधलेखक स्वयं उत्तरदायी रहेगा।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1	लीलावत्यां क्षेत्रव्यवहारः	**डॉ. विजेन्द्रकुमारशर्मा** अध्यक्षः, ज्योतिषविभागः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, बलाहरः हिमाचलप्रदेशः	1
2	वास्तुक्षेत्राकृत्यनुसारेणपदविन्यासभेदाः	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्यो वास्तुशास्त्रविभागः **सोनाली**, शोधच्छात्रा वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	7
3	प्रश्नविचिन्तने प्रश्नवाक्यस्य प्राधान्यम्	**डॉ. गिरीश एम.पी.** सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः तिरुवनन्तपुरम्	15
4	चम्बानगरस्य मन्दिराणां वास्तुसंरक्षणे पर्यावरणस्य भूमिका	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः **सन्तोषकुमारः** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	20
5	वास्तुसौख्यग्रन्थोक्तवृक्षपादपाना-मौषधीयगुणविमर्शः	**डॉ. प्रवेश व्यासः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः **प्राची गुप्ता**, शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली	28
6	वास्तुशास्त्रे मुहूर्त्तस्योपादेयता	**डॉ. रतीशकुमार झा** अतिथिव्याख्याता, ज्योतिषविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली- 16	33

वास्तुक्षेत्राकृत्यनुसारेण पदविन्यासभेदाः

डॉ. अशोक थपलियालः तथा सोनाली

वास्तुशास्त्रं व्यावहारिकं शास्त्रमस्ति। व्यावहारिकधरायां प्रत्येकं मनुष्यस्य सुख-समृद्धि-शान्त्यादिप्राप्त्यर्थं विशेषेच्छा भवति। भोजनवस्त्रनिवासानां व्यवस्था सर्वेषां कृते सुलभा भवेदिति राज्यस्य कल्याणाय एकमादर्शसंकल्पं भवति। भारतीयजीवनपरम्परायां चतुर्विधाश्रमाः मानवजीवनस्य पूर्णतासिद्ध्यर्थं महत्वपूर्णाः भवन्ति। अपि च धर्म-अर्थ-काम-मोक्षपुरुषार्थानां प्राप्तिः मानवजीवनस्य लक्ष्यं वर्तते। एतेषां चतुर्विधाश्रमाणां पुरुषार्थानां कृते तथा चाश्रमिणां कृते सर्वप्रथमं वास्तोः आवश्यकता भवत्येव। मानवजीवनस्य कल्याणं वास्तोः प्रमुखम् उद्देश्यं वर्तते। प्राणिमात्रस्य कल्याणाय वेदाः यज्ञयागाद्यर्थं प्रचोदयन्ति। अथर्ववेदस्योपवेदत्वेन स्थापत्यवेदः परिगण्यते। अतः इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं वेदयति योऽसौ वेद इत्युक्त्यनुसारं वेदस्य परमलक्ष्यमेव वास्तुशास्त्रस्यापि लक्ष्यम्। वास्तुशास्त्रं गृहनिर्माणसन्दर्भेऽस्माकं पथप्रदर्शकमस्ति। शास्त्रमिदम् आवासनिर्माणप्रविधीनां विषये चापि मार्गदर्शनं करोति। ऋग्वेदे वास्तोष्पत्तिसंज्ञकदेवस्य स्तुतौ कथितमस्ति यद्वयं सुखयुक्तं रमणीयम् ऐश्वर्ययुक्तञ्च स्थानं प्राप्नुयामः। अस्माकं सदैव कल्याणकारकानि साधनोपकरणानि देहि[1]।

भारतीयवास्तुशास्त्रं सर्वविधसुख-समृद्धि-शान्तिमय-सुविधापूर्णगृहस्य निर्माणयोजनां प्रस्तौति। **वसन्त्यस्मिन्निति वास्तु** अर्थात् यत्र प्राणी निवसति तदेव तद्वास्तु। अतः सामान्यार्थेषु निवासयोग्या भूमिः (भवनं) वास्तु। शिल्पशास्त्रं स्थापत्यशास्त्रञ्च वास्तुशास्त्रस्येवाङ्गे स्तः।[2] वास्तुशब्दस्य निर्वचनं प्रस्तूयता भगवता यास्काचार्येणोक्तम्-'**वास्तुर्वसतेर्निवासकर्मणः**'[3] इति। वास्तुशब्दः **वस् निवासे** धातोः निष्पन्नो भवति। वास्तुशास्त्रशब्दस्य व्युत्पत्तिलभ्योऽर्थोऽस्ति यस्मिन् मनुष्याः निवसन्तीति[4]। अतः निवासयोग्यं स्थानमिति वास्तु। एतदर्थं **वसति** शब्दरूपस्य प्रयोगः क्रियते। हिन्दीभाषायां **बस्ती** शब्दः अपि वास्तोः परिचायकः,परञ्च भेदवशाद् ग्राम-नगरादिभ्यः अस्य शब्दस्य प्रयोगः क्रियते। पाणिनिमतानुसारेण **वस्-निवासे**[5] इत्यस्माद्धातोः **वसेस्तुन्वसेर्णिच्च**[6] इत्यनयोः सूत्रयोः वस् धातोः तुन् प्रत्यये कृते सति वस्तुशब्दो निष्पद्यते। वस् धातौ णित् प्रत्यये कृते सति णित्वादुपधावृद्धिस्तेन वा शब्दो निष्पन्नो भवति। वास् शब्दे

---

1 ऋग्वेद 07-54-01

2 वाचस्पत्यम्

3 निरूक्त -10.02.16

4 सिद्धांतकौमुदी भवादिगण

5 सिद्धान्त कौमुद्याम्,भ्वादिगणे परस्मैपदी

6 उणादिप्रकरणम् सूत्र- 75 व 657

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, द्वितीय अंक

मई - जून 2020

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

Bharatiya Jyotisham

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय-सूची

लेख विषय		
1. पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण बल	डॉ. आलोक बपलियाल	02
2. भारतीय ज्योतिष में पृथ्वी के आकार की अनुसंशा	डॉ. मृत्युञ्जय कुमार तिवारी	06
3. दार्शनिक चिन्तन का अनुशीलन एवं विश्व अभ्युदय	डॉ. घनश्याम मिश्र	08
4. कृषि पाराशरोक्त वृष्टि के पूर्वानुमान का प्रायोगिक अध्ययन	डॉ. नवीन तिवारी	13
5. कोरोना का ज्योतिषीय विश्लेषण कारण एवं निवारण	डॉ शम्भू दयाल मिश्र	17
6. शिक्षा व्यवस्था में ऑनलाइन-शिक्षण की आवश्यकता	दीपक तिवारी	20
7. अग्निदेवता की प्रासङ्गिकता	डॉ. विनीता पाण्डेय	22
8. गौतम धर्मसूत्रीय न्यायव्यवस्था : एक अवलोकन	दीपक कन्देवार	24
9. संस्कृत व्याकरण के अवगमन में अष्टाध्यायी पद्धति एवं प्रक्रिया पद्धति की भूमिका	डॉ. वेदानन्द	29
10. ज्योतिषशास्त्र में वृष्टिविचार	तपति तपस्विता महापात्र	32
11. शनि : ज्योतिष एवं लाल किताब के अनुसार	सोनाली	34

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा

प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा

अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र

अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, क.जे.सोमैया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा

अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी

अध्यक्ष - साहित्यविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414 Bi - Monthly Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

9805034336

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

9039804102

सम्पादक

रोहित पचौरी

9752529724

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

9754648985

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैत्रै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,

फेज - 3, लहारपुर,

भोपाल - 462043

मध्यप्रदेश

Web - www.bharatiyajyotisham.com

E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com

Mob : 9752529724, 9039804102

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of Bharatiyajyotisham Pvt. limited. L 108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043

Editor - ROHIT PACHORI*

सम्पादकीय

भारत की एक अक्षुण्ण परम्परा है पञ्चाङ्ग परम्परा। वर्षारम्भ या युगादि पर्व का एक महत्त्वपूर्ण अंग है पञ्चाङ्गश्रवण। अर्थात् वर्ष के प्रारम्भ में पञ्चाङ्ग की विभिन्न विशेषताओं के साथ उस वर्ष सम्भावित प्राकृतिक-राजनैतिक-आर्थिक विभिन्न परिस्थितियों पर ज्योतिषीय विश्लेषण को दैवज्ञ प्रस्तुत करते हैं। इस कार्य हेतु तथा पञ्चाङ्गधारियों के निजी परामर्श हेतु पञ्चाङ्ग में एक पूर्व पीठिका के नाम से भाग दिया जाता है। इस भाग में वर्षभर के ग्रहचार, ग्रहण आदि का विवरण प्रस्तुत करते हुये सामूहिक तथा व्यक्तिगत फलों का वर्णन किया जाता है। इसी भाग में वर्षा का निर्णय एवं उपयुक्त फसलों का भी वर्णन किया जाता है। इन सभी के आधार पर पञ्चाङ्ग के अनुयाई तथा परम्परा के अनुयायी अपने वर्ष भर के वार्षिक प्रणाली को अन्तिम रूप दे सकते है।

किन्तु वर्तमान स्थिति सभी से सुपरिचित है। वर्तमान काल में यह परम्परा गौण हो चुकी है। इसको केवल औपचारिकता हेतु निभाया जाता है। इस औपचारिकता के कारण धीरे-धीरे लोगों में पञ्चाङ्गपरम्परा के अनेक विषयों का प्रचार-प्रसार ही नहीं हो रहा है। इस कारण से वे सम्भ्रम स्थिति में रहते हैं तथा उनके चिन्तन में परम्परा सही स्थान प्राप्त कर नहीं पाती है। इन अपूर्ण चिन्तनों के कारण ही विश्व भर में करोना नामक हडकम्प मचने के बाद अनेक सवाल साधे गये है। कोई भी शंकराचार्य क्यों अपने तपोबल से समाप्त नहीं कर पा रहा है? क्यों कोई दैवज्ञ इनका पूर्वानुमान नहीं किया है? इत्यादि प्रश्न सभी के सामने आये हैं तथा समाचार पत्रों में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये ही हैं।

महामारी से सम्बन्धित सूचना अनेक पञ्चाङ्गों के पूर्वपीठिका में दिया ही गया था। यदि इस बात को गौण मान लेते हैं तो भी वर्तमान समस्या तथा लोगों में उत्पन्न प्रश्नों का प्रमुख कारण तो पञ्चाङ्गों को तथा परम्परा को औपचारिक रूप से निभाना ही है यह स्पष्ट हो जाता है। वर्तमान वैश्विक महामारी एक बार फिर भारत की अस्मिता तथा भारत की परम्पराओं की आवश्यकता पर बल दिया है। देर भले हुआ है किन्तु समय बीता नहीं है। अब अपनी परम्पराओं की ओर तथा प्राचीन पद्धतियों की ओर एवं पञ्चाङ्गों की सम्यगनुपालन की ओर वापस होने का समय आसन्न हो गया है।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण बल

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पृथिवी में गुरुत्वाकर्षण बल है। जिस कारण वह गैसीय पदार्थों को छोड़कर अन्य पदार्थों को तुरन्त अपनी ओर खींचती है। आधुनिक विद्वान्, सर आइजैक न्यूटन[1] को गुरुत्वाकर्षण की खोज का श्रेय देते हैं। उन्होंने अपने गणितीय सिद्धान्तों के आधार पर इसे प्रमाणित किया। अतः उनको इसका श्रेय अवश्य मिलना चाहिए, परन्तु स्वाभाविक रूप से प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि सेब या अन्य पदार्थों को पृथिवी पर गिरते हुए न्यूटन से पूर्व भी कई लोगों ने देखा होगा। क्या इससे पूर्व गुरुत्वाकर्षण पर किसी का ध्यान ही नहीं गया? जिसने विश्व को दाशमिक प्रणाली, पृथिवी के गोलत्व, अक्षभ्रमण जैसे कई वैज्ञानिक सिद्धान्तों को दिया, क्या उन भारतीयों ने लेशमात्र भी गुरुत्वाकर्षण बल का ज्ञान न रहा होगा? इत्यादि। उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर पृथिवी के गोलत्व की अवधारणा में छिपा हुआ है। पृथिवी गोल है और गोलाकार वस्तु पर गुरुत्व या चुम्बकीय शक्ति के बिना अधो भाग में कोई छोटा सा पदार्थ भी स्थिर खड़ा नहीं रहा जा सकता है, यह स्वाभाविक बात है। पृथिवी गोल है तो उसके नीचे वाले भाग में स्थित समुद्र, पर्वत, मनुष्यादि किस प्रकार स्थिर रह सकते हैं?

पृथिवी के गोलत्व के विषय में सर्वप्रथम ऋग्वेद में चर्चा दिखती है। प्राचीन भारतीय मतानुसार वेद अपौरुषेय हैं। साथ ही अनादि व अनन्त भी हैं। आधुनिक विद्वानों में भी इस विषय में कई मत मतान्तर हैं, परन्तु वेदवाङ्मय की रचना कम से कम 5000 वर्ष पूर्व हो चुकी थी, इस बात को सभी मानते हैं। ऋग्वेद में वृत्रासुर के दूतों द्वारा इन्द्र को पकड़ने हेतु प्रयास करने के सन्दर्भ में कहा गया है कि -

चक्रणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः।
न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशा अदधात् सूर्येण।।[2]

अर्थात्सुवर्णमय अलंकारों से सुशोभित (वृत्र के) दूत पृथिवी की परिधि के चारों ओर चक्कर लगाते हुए तथा आवेश से दौड़ते हुए भी इन्द्र को जीतनें में समर्थ नहीं हुए। (फिर उसने उन) दूतों को सूर्य (प्रकाश) से आच्छादित किया।[3]

इस ऋचा के 'परीणहं चक्राणासः' शब्द से स्पष्ट है कि हमारे ऋषियों को ज्ञात था कि पृथिवी की आकृति गोल है, सपाट नहीं। पृथिवी यदि समतल होती और उसमें गोलत्व न होता। तो फिर सूर्य की किरणें आधी पृथिवी पर एक साथ पड़ती परन्तु इस प्रकार न पड़कर क्रमशः पड़ती हैं, ऐसा वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। सविता द्वारा त्रैलोक्य को प्रकाशित करने के सन्दर्भ में कहा गया है कि-

आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे।
प्रबाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्।।[4]

अर्थात् दैदीप्यमान (सविता ने) अन्तरिक्ष के, द्युलोक के (और) पृथिवी पर के प्रदेश (तेज से) भर डाले हैं।..... अपनी कान्ति से जगत् को सुलाते एवं जाग्रत करते हुए सविता ने उदित होकर अपनी बाहें फैला दी है।[5]

दिन या रात का कारण स्पष्ट करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है -

स वा एष न कदाचनास्तमेति नोदेति तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते रात्रिमेवावस्तात् कुरुतेऽहः परस्तादथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यतेऽहरेवावस्तात् कुरुते रात्रि परस्तात् स वा एष न कदाचन निम्नोचति।[6]

अर्थात् वह (सूर्य) न तो कभी अस्त होता है न उगता है। यह जो अस्त होता है वह दिन के अन्त में जाकर अपने को उल्टा घुमाता है। इधर रात करता है और उधर दिन। इसी प्रकार यह जो सुबह उगता है वह रात्रि का अन्त करके अपने

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पश्यति भावयत् लोकान्

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक
प्रो. पी. वी. बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक
अविनाश उपाध्याय

सम्पादक
डॉ. रोहित पचौरी
डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग
पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट, चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya Jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - **DR. ROHIT PACHORI** *

ISSN 2278 - 0327

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्व प्राचार्य-केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
पूर्व अध्यक्ष-तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
निदेशक
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, राजीव गांधी परिसर

प्रो. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. श्रीगोविन्द पाण्डेय
निदेशक
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गुरुवायूर परिसर

प्रो. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर, फेज - 3, लहारपुर,
भोपाल - 462043, मध्यप्रदेश
Web : www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

सम्पादकीयम् ....

"वेदोऽखिलोधर्ममूलम्" वैदिक ज्ञान भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का आधार है। यह ज्ञान न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, अपितु इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन जैसे कई क्षेत्रों की गूढ़ जानकारियाँ भी समाहित हैं। वेद चार हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। ये सभी मिलकर वैदिक साहित्य का निर्माण करते हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने का मार्गदर्शन करते हैं।

आज वैदिक ज्ञान के स्रोत के रूप में वेदों के अतिरिक्त उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, और स्मृतियाँ भी वैदिक ज्ञान के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। वेदों को श्रुति माना गया है, अर्थात् यह सुनी हुई बातें हैं, जो ऋषियों ने ध्यान और साधना के माध्यम से प्राप्त की हैं। वेदों में मंत्र, सूक्त, और ऋचाएँ शामिल हैं, जो मुख्य रूप से प्रकृति की आराधना और यज्ञ-कर्मकांड से संबंधित हैं।

वैदिक ज्ञान के प्रमुख क्षेत्र धर्म और आध्यात्म: वेदों में कर्मकांड, यज्ञ, और उपासना का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसके माध्यम से व्यक्ति आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझ सकता है।

विज्ञान और गणित: यज्ञ की विधियाँ और ज्योतिष शास्त्र में गणितीय सिद्धांतों का प्रयोग स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सूर्य, चंद्रमा, ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का वर्णन विज्ञान का अद्भुत उदाहरण है।

चिकित्सा के क्षेत्र में अथर्ववेद आयुर्वेद के मूल में पाया जाता है। इसमें विभिन्न बीमारियों के उपचार और औषधियों के उपयोग का विवरण मिलता है। दर्शन के क्षेत्र में उपनिषदों के ब्रह्मज्ञान, आत्मा, पुनर्जन्म, और मोक्ष के सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन है। यही भारतीय दर्शन का आधार है।

आधुनिक समय में भी वैदिक ज्ञान की प्रासंगिकता शाश्वत है और हमेशा रहेगी। योग और ध्यान की विधियाँ, जो वेदों में वर्णित हैं, आज भी मानसिक शांति और स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली भी आज के चिकित्सा जगत में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है।

वैदिक ज्ञान केवल प्राचीन इतिहास का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह जीवन का मार्गदर्शन करने वाली अनमोल धरोहर है। इसकी शिक्षाएँ आज भी हमें नैतिकता, ज्ञान और आध्यात्मिकता के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को समझने के लिए वैदिक ज्ञान का अध्ययन आवश्यक है और इसे संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है। यह "ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्" उक्त वैदिक ज्ञान के सभी पक्षों को शोधछात्रों, अध्यापकों, अनुसंधाताओं के प्रामाणिक शोधलेखों के माध्यम इस पत्रिका में अपने विचारों के साथ प्रस्तुत करते हैं। यह पत्रिका सम्प्रति प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों, विद्यावारिधि, शोधछात्रों, अनुसंधानकर्ताओं आदि के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में हमेशा ही अग्रणी और उपयोगी सिद्ध होती रही है। आशा है पाठकों के लिए अपनी प्रामाणिकता शोधपरक लेखों के कारण आगे भी उपयोगी सिद्ध होती रहेगी।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

विषय - सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

ISSN 2278 - 0327

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श

डॉ. अशोक थपलियाल

आचार्य-वास्तुशास्त्र

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पंचांग के पांच अंगों में नक्षत्र साधन महत्वपूर्ण है। नक्ष् + अत्रन्, न क्षीयते क्षरते वा।[1] ' अर्थात् जो कभी घटता या नष्ट नहीं होता है। तैत्तिरीयब्राह्मण में नक्षत्रशब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी गयी है-

न वा इमानि क्षत्राण्यभूवन्निति। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्।।[2]

अर्थात् जो क्षत नहीं हैं वे नक्षत्र हैं। वहीं अन्यत्र में लिखा है कि- *सलिलं वा इदमन्तरासीत्। यदतरन्। तत्तारकाणां तारकत्वम्यो। वा इह यजते। अमुं स लोकं नक्षते। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। देवगृहा वै नक्षत्राणि। य एवं वेद। गृहयेव भवति। यानि वा इमानि पृथिव्याश्चित्राणि। तानि नक्षत्राणि। तस्मादश्लीलनामंश्चित्रे नावस्येन्न यजेत। यथा पापाहे कुरुते। तादृगेव तत्।।*[3]

अर्थात् बीच में जल था। चूंकि उसमें तैर गयी इसलिए तारकाओं को तारकत्व प्राप्त हुआ। जो यहाँ यज्ञ करता है, वह उस लोक में जाता है, इसलिए नक्षत्रों का नक्षत्रत्व है। नक्षत्र देवताओं के गृह हैं। जो यह जानता है, वह गृही होता है। ये जो पृथिवी के चित्र हैं, वे नक्षत्र हैं। अतः अशुभ नामवाले नक्षत्रों में कोई कार्य समाप्त नहीं करना चाहिए और न तो यज्ञ ही करना चाहिए। उसमें कार्य करना पापकारक दिन में करने के समान ही है।[4] निरुक्त में नक्षत्र शब्द का निरूपण इस प्रकार किया गया है- *'नक्षत्राणि नक्षतेर्गतिकर्मणः'*[5]

इस प्रकार नक्षत्र शब्द का अर्थ है जो कभी नष्ट या अपने स्थान से हिलते नहीं हैं। वस्तुतः पृथ्वी की अक्षीय गति पश्चिम से पूर्व की ओर है। जिस कारण पृथ्वी पर स्थित हमें ग्रहों के साथ नक्षत्र भी पूर्व से पश्चिम की ओर चलते दिखाई देते हैं। सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने पृथ्वी की अक्षीय गति को कहा-

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत् समपश्चिमगानि लंकायाम्।[6]

पृथ्वी की अक्षीय गति के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर चलते हुए दिखाई देने वाले ग्रह अपने स्वाभाविक पूर्वाभिमुखी गति से चलते हैं। जिस कारण वे नक्षत्रों के सापेक्ष पूर्व की ओर खिसकते हुए दिखते हैं। परन्तु नक्षत्र अपना स्थान बदलते हुए नहीं दिखाई देते हैं तथा ठीक 23 घंटे 56 मिनट 4 सैकेण्ड अर्थात् एक नाक्षत्रदिन के पश्चात् वे अपने पुराने स्थान पर दिखाई देते हैं। इसीलिए नक्षत्रों को न क्षरतीति अर्थात् अपने स्थान से च्युत न होने वाले कहा गया है। इस प्रकार हम नक्षत्रशब्द को परिभाषित कर सकते हैं।

नक्षत्रों के सापेक्ष ग्रह पूर्व की ओर खिसकते हुए दिखते हैं। इसलिए उनकी पूर्वाभिमुखी गति कही जाती है। कोई भी ग्रह जब किसी नक्षत्र विशेष के नजदीक होता है तो उस आधार पर उसका स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे यदि सूर्य हस्त नक्षत्र के पास हो तो कह सकते हैं कि सूर्यनक्षत्र हस्त है जिससे क्रान्तिवृत्त में कन्या राशि में उसकी स्थिति निर्धारित हो जाती है। क्रान्तिवृत्त में ही नक्षत्रों एवं राशियों की स्थिति मानी जाती है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की स्थिति नक्षत्रों के सापेक्ष जानी जाती है। कहा जा सकता है कि जिस प्रकार गन्तव्य जानने हेतु सड़क में दूरी नापने के लिए किलोमीटर या मील दर्शक पत्थर होते हैं उसी प्रकार आकाश में ग्रहों की स्थिति जानने के लिए नक्षत्र एवं राशियाँ हैं। इस तरह आकाशस्थ सुनिश्चित स्थान पर स्थिर नक्षत्रों को ग्रहण करने वाले ग्रह कहलाते हैं। अतः महर्षि पाराशर का कथन है-

तेजः पुंजानुवीक्ष्यन्ते गगने रजनीषु ये।
नक्षत्रसंज्ञकास्ते तु न क्षरन्तीति निश्चलाः।।
विपुलाकारवन्तोऽन्ये गतिमन्तो ग्रहाः किल।
स्वगत्या भानि गृह्णन्ति यतोऽतस्ते ग्रहाभिधाः।।[7]

नक्षत्रों के सापेक्ष ग्रहों की स्थिति बताने की यह पद्धति वैदिककाल से ही भारत में प्रसिद्ध है। पंचांगपत्रक में तिथ्यादिक्रम में जो नक्षत्र सूचित किए जाते हैं, वे नक्षत्रों के सापेक्ष चन्द्र की स्थिति प्रकट करते हैं। अर्थात् वे चन्द्रनक्षत्र हैं।

नक्षत्रों की संख्या, नाम एवं राशि विचार

आकाशनिरीक्षण करने पर असंख्य तारे दिखाई देते हैं। इनमें प्रायः मध्य आकाश में सूर्य का पूर्वाभिमुख भ्रमणवृत्त, जिसको क्रान्तिवृत्त के नाम से भी जानते हैं, होता है। इसके उत्तर व दक्षिण दोनों ओर 9-9 अंश के कल्पित पट्टे में ही सभी ग्रह स्थित हैं। इसे ही भचक या नक्षत्रचक्र अथवा राशिचक्र भी कहा जा सकता है। इसमें स्थित तारों के समूह को 27 समान भागों में बांट दिया गया है। प्रत्येक भाग के प्रमुख तारे के नाम पर उस समूह का नाम हमारे प्राचीन आचार्यों ने दिया है। इन तारासमूहों

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला–षोडश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नइ दिल्ली–110016

प्रकाशक-

वास्तुशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016

ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2023

मुद्रण वर्ष - 2024

मूल्य- ₹ 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है। शोधलेखों में लेखकों के स्वयं के विचार हैं। शोधलेख में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर शोधलेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

विषयानुक्रमणिका

1.	वास्तुशास्त्रीयग्रन्थानुसारं वृक्षविषयकसमीक्षणम्	**डॉ. छबिलालन्यौपानेः** सहायक-प्राचार्यः (दर्शनम्) नागार्जुन-उमेश-संस्कृतमहाविद्यालयः (का.सिं.द.सं.विश्वविद्यालयस्याङ्गीभूतः) तरौनीग्रामः, दरभङ्गाजनपदः बिहारराज्यम् – 847233	01
2.	द्वारविन्यासक्रमे दोषाः निवारणोपायाश्च – एकम् अध्ययनम्	**डॉ. गणेशकृष्णभट्टः** सहायकाचार्यः (अतिथिः) ज्योतिषविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गुरुवयूर परिसरः, त्रिशूरः, केरल	14
3.	ग्रामस्य मुख्यद्वारम्	**डॉ. अश्वनीकुमारः** सहायकाचार्यः (अतिथिः) राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः (आ.प्र.)	18
4.	लङ्कादेशस्य स्थानपरिकल्पनायां भेदः वर्तमानस्थितिश्च	**अंशुलकुमारदुबे** प्राध्यापकः ज्योतिषशास्त्रम् रा.वरि. उपा.सं.विद्यालय, बाँली (सवाईमाधोपुरम्), राजस्थानम्	22
5.	वासगृहे आन्तरिकप्रकोष्ठविन्याससम्बद्धाः वास्तुदोषाः, तेषां निवारणोपायाश्च	**गिरीशभट्टःबि,** शोधच्छात्रः, निदेशकः - प्रो. ए. श्रीपादभट्टः, आचार्यः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः, आ.प्र.	28
6.	भारतीयमन्दिराणां पर्यावरणेन सह सम्बन्धः	**मेघा शर्मा,** शोधच्छात्रा, **निदेशक- प्रो. बिहारी लाल शर्मा** ज्योतिष विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.स.वि. वि., नई दिल्ली	35

7.	श्रीमद्रामायणदिशा नगरवास्तुविचारः	**ए. श्रीनिवास शर्मा,** शोधच्छात्रः, निर्देशकः- प्रो. ए.श्रीपादभट्टः, ज्यौतिष-वास्तुविभागः राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः	43
8.	वाल्मीकिरामायणानुसारं गृहकक्षाणां समीक्षा	**श्रीमतीज्योतिशर्मा,** शोधच्छात्रा, **निदेशक- प्रो. अशोकथपलियालः,** आचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः श्री ला.ब.शा.रा.स.वि. वि., नवदेहली	49
9.	आमेरदुर्गस्थ शिलादेवीमन्दिरस्य स्थापत्यकला	**प्रियाकौशिकः,** शोधच्छात्रा **निदेशक- डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा,** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्री ला.बा.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली	54
10.	द्वार-मर्मस्थानयोः सम्बद्धाः वास्तुदोषाः, तेषां निवारणोपायाश्च	**अनिलकुमारदेसायिः,** शोधच्छात्रः, निर्देशकः- डॉ. कृष्णकुमारभार्गवः, ज्योतिष-वास्तुविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः	67
11.	भारतीय वास्तुशास्त्र का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप विमर्श	**प्रो. वासुदेव शर्मा** पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, जम्मू	73
12.	वास्तु और पर्यावरण	**प्रो. अमित कुमार शुक्ल** ज्योतिष विभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	78
13.	अन्तरिक्ष नाड़ी का अंशानुक्रम विभाग	**विद्यावाचस्पति प्रो. सुन्दरनारायणझा** आचार्य वेदविभाग श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नवदेहली-16	86
14.	मन्दिर निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त	**डॉ. सुभाष पाण्डेय** सहाचार्य, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	106

वाल्मीकिरामायणानुसारं गृहकक्षाणां समीक्षा

श्रीमतीज्योतिशर्मा

लौकिकसाहित्ये वाल्मीकिरामायणं, महाभारतं, नाट्यशास्त्रं, शुक्रनीतिः, अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्रं, बौद्धजातकम् इत्यादिप्राचीनग्रन्थाः सन्ति, येषां समयः निश्चितरूपेण न ज्ञायते तथा चेषां निश्चिततिथीनामभावे परवर्तिग्रन्थेषु प्राप्तान् नामोल्लेखान् सङ्केतान् च आधारीकृत्य तर्क-वितर्काः क्रियन्ते। एतद्ग्रन्थेषु वास्तुसम्बद्धा या सामग्री उपलब्धा अस्ति, तस्याः ऐतिहासिकं महत्त्वं वर्तते। एवंविधकतिपयग्रन्थेषु रामायणे प्राप्तवास्तुकलायाः वर्णनपुरस्सरं समीक्षणङ्क्रियते-

भारतीयपरम्परायां रामायणस्य कालः त्रेतायुगद्वापरयुगयोः सन्धिकालः मन्यते, परन्तु आधुनिकैः विद्वद्भिः तस्य मुख्यभागस्य रचनाकालः प्रायः ५०० ई.पू. इति स्वीकृतः। तदनुसारमस्य ग्रन्थस्य केचन अंशाः पश्चाद् योजिताः।[1] आदिकविना महर्षिवाल्मीकिना विरचितं रामायणं लौकिकसाहित्यस्य आदिकाव्यमिति नाम्नापि सम्बोध्यते। रामायणं २४००० पद्येषु निबद्धमेकं महाकाव्यमपि अस्ति।[2]

रामायणे प्रतिपादितप्रत्येकनिर्माणकार्यहेतोः दक्षवास्तुविदुषां कुशलशिल्पीनां प्राधान्यं प्रदत्तम् अस्ति। विविधमहत्त्वपूर्णनिर्माणकार्याणां सम्पादनात्परं शिल्पिनः वास्तुविदः नामोल्लेखसहितं सम्मानं दीयते स्म। रामायणकालीनजीवने मानवानां गृहविन्यासेऽपि वास्तुशास्त्रस्य प्रयोगः दृग्गोचरो भवति। रामायणे समावेशितायाः गृहवास्तुकलायाः ज्ञानात्प्राग् वास्तुपरिभाषाया अवगमनम् आवश्यकम्। वास्तुशब्दः **वस् निवासे** धातोः निष्पन्नः। अस्य व्युत्पत्त्यर्थः **वसन्ति प्राणिनो यत्र** अर्थात् यत्र मनुष्याः निवसन्ति इत्येवं कृतः।[3] नगर-गृह-भवनाद्यावासः यत्र मनुष्याः निवसन्ति, वास्तुनाम्ना ज्ञायन्ते।[4] वास्तोः वैदिकदेवता ऋग्वेदे वास्तोष्पति इति नाम्ना अभिहिता।[5]

ऋग्वेदे गृहवास्तुसम्बन्धे कथितं यद् यः मनुष्यः सर्वतः अत्यन्तं सावकाशं गृहं निर्माय वसति, सः निरोगी सन् स्वम् अन्यान् च जनान् सुखं प्रयच्छति। सुन्दरगृहार्थे सुवास्तुः[6] एवं गृहाभावार्थे कुवास्तुः[7] इति शब्दप्रयोगः प्राप्यते। तत्र रामायणकालीनगृहनिर्माणकला मुख्यरूपेण युग्मगृहं, सामूहिकगृहं, व्यावसायिकगृहं, प्रशासनिकगृहं चेति चतुर्षु भागेषु विभक्तुं शक्यते। रामायणकालस्य गृहाणि वास्तुविद्भिः अत्यन्तं सुशोभितानि कृतानि। समस्तगृहेषु

1. भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास, पृ. 66
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 123
3. शब्दकल्पद्रुमः, भागः – 4, पृ.248
4. हिन्दीसंस्कृतकोश, पृ.923
5. ऋग्वेदः, 7.54.1
6. ऋग्वेदः – 8.19.37
7. अथर्ववेदः – 12.9.7

www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 49 (July-August, 2023)

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Online, Peer Reviewed Journal, Impact Factor (RJIF): 5.11, ISSN NO. : 2454-9177

Publication Certificate

This certificate confirms that " श्रीमतीज्योतिशर्मा, डॉ. अशोकथपलियाल: " has published article titled " वैदिककालीनभवनानां समीक्षा ".

Details of Published Article as follow:

Volume : 49
Issue : July – August
Year : 2023
Page No. : 103-105

Yours Sincerely,

Anil Aggarwal
Publisher
National Journal of Hindi & Sanskrit Research
Web: www.sanskritarticle.com

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023 1(49): 103-105
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

श्रीमतीज्योतिशर्मा
शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभाग:,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालय:,नवदेहली

शोध निर्देशक :
डॉ. अशोकथपलियाल:,
आचार्य:, वास्तुशास्त्रविभाग:,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालय:, नवदेहली

Correspondence:
श्रीमतीज्योतिशर्मा
शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभाग:,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालय:,नवदेहली

वैदिककालीनभवनानां समीक्षा

श्रीमतीज्योतिशर्मा, डॉ. अशोकथपलियाल:

प्राय: वास्तुशैल्या: विकासस्य विचारं कुर्वन्त: जना: वर्तमानरूपस्य आधारेण तस्या उत्पत्तिं कल्पयन्ति। एतत् कुर्वन्त: ते तस्य विकासस्य मध्यपदं त्यक्त्वा सर्वथा आदिमपदं कल्पयितुं आरभन्ते, यस्मात् कारणात् तेषां निष्कर्षो भ्रामको भवति, संशयस्य स्थानं च भवति। समुचितंत्विदं यत् साम्प्रतिकवास्तुकलाया: ह्यस्तनवास्तुकलया सह सन्तुलनं विचार्य तत्पूर्वदिनै: साकं सम्बद्धं कृत्वा अन्ते तस्या: प्रप्रथमस्वरूपस्य विचारो भवेदिति। तस्मिन् एव क्रमे कस्यापि प्राचीनस्य वास्तुन: अद्यतनवास्तुना सह सम्बन्धं स्थापयितुं वयं समर्था भवाम: । यथोक्तमस्ति -

"आदौ मनुष्येण गुहा- कुटीराणि च स्वस्य रक्षणसाधनरूपेण कृतानि आसन् । एतेषु गुहा: प्राकृतिका:, कुटीराणि च मानवकृतानि सन्ति। एतयो: रूपयो वास्तु: विकसित: इति स्पष्टम् । कुटीरनिर्माणस्य प्रारम्भिकानि साधनानि के आसन् इति न ज्ञायन्ते। यथोपलब्धसामग्यनुसारेण प्राचीनजना: कुटीरादिकं निर्मितवन्त:। तत: मानवबुद्धे: विकासेन सह यदा तेऽधिकस्थायिसामग्रिभि: निवासस्थानानि कृतवन्त:, तदा तै: स्वस्य पुरातनवास्तूनां रूपाणि सर्वथा न त्यजितानि। तेषां प्राचीनवास्तूनां सङ्कल्पनानुसारेणैव नूतनवास्तूनां रचनाऽभवत् । अस्मिन्नैव क्रमे वास्तुयोजनाया: निर्माणस्य स्वरूपस्य च विकासो जात:।"[1]

अत: भारतीयवास्तुशास्त्रस्य मूलसंकल्पनाज्ञानार्थं वैदिकवास्तुन: विषये ज्ञानमावश्यकम्। अत्र वैदिकवास्तुविषये विमर्श: प्रस्तूयते -

वेद संहितासु ऋग्वेद: प्रथमो भवति। ऋग्वेदे निवासार्थं गृहशब्दस्य प्रयोग: कृत: अस्ति।[2]

अस्मिन् वेदे गृहस्य अनेके पर्यायवाचीशब्दा: प्रयुक्ता: यथा-

'गृहं, गय:, धामन्, दम:, दुरोण:, दुर्य:, स्थानम्, सदस्, सद्म, सदनम् , नृषदन:, मान:, विमान:, द्रय:, अयन:, शर्म:, आयतन:, क्षय:, श्रय:, हर्म्य : , ओट्स:, वास्तु:, वसति:, प्रसद्मन:, निवेशन:, वेश्म: , वेश:, साला, शाला, नीड:, पस्त्या , अस्त इत्यादय :।'[3]

एतेषां सर्वेषां प्रयोग: परवर्ति परम्परायां आवासीयभवनानां कृते प्रचलितो जात:, यस्यार्थ: अपि प्राचीनसन्दर्भेषु स्पष्टो भवति। कदाचित् **'सदस्'** शब्द: उपवेशनस्थानस्य सूचक:, यस्य कृते सभा, समिति:, विदथ इत्यादय: शब्दा: अपि ऋग्वेदे प्रयुक्ता: सन्ति। तत्र गृह निर्माणसम्बद्धानां बहूनां सिद्धान्तानां च संकेता अपि प्राप्यन्ते । अपि चात्र गृहस्य भवनस्य वा निर्माणसम्बन्धीनामथवा तस्य वास्तुभागानां कृते प्रयुक्ता: अन्ये बहव: सामान्यशब्दा: अपि अतीवमहत्वपूर्णा: सन्ति । **यथा-**

"स्तम्भ: , स्कम्भ: , कम्भ: , स्थूणा , अय: , स्थूण: , धरुण: , धातु , साल[4] **,छदिस् , वरूथ:, द्वार , द्वा:, दुर:।**[5] अस्मिन् वेदे एव बृहद्गृहस्य कृते 'बृहत् क्षय:' दीर्घसद्मन: इत्यादय: शब्दा: प्रयुक्ता: सन्ति ।"[6]

अत्र गृहस्थापत्यस्य विशेष: महत्त्वपूर्णश्च भाग: स्तम्भ: , स्थूणा, थूनी वा आसीत्। एतया दृष्ट्यैव इन्द्राय गृहस्य विश्ववास्तुनो वा सर्वोत्तमस्तम्भस्य स्वाम्युक्त:।[7] अस्य वेदस्य एकस्मिन् मन्त्रे दृढे आधारे स्थापितानां त्रयाणां स्तम्भानां उल्लेख: प्राप्यते, तेषु त्रिकोणीय अथवा मृदङ्गाकार छर्दि: आसीत्।[8] गृहस्य छर्दिस: आश्रयार्थं स्तम्भानां स्थापना 'अनिवार्या' आसीत्।[9] स्तम्भस्य अधिष्ठानस्य आधारस्य धरुणं नाम आसीत्।[10] ऋग्वेदे केवलं निर्मितगृहाणां कृते **'सदनानि कृत्रिमा'** शब्द: प्रयुक्तो दृश्यते।[11] तत्र गृहाणां निर्माणं मृत्तिकात: कथितमस्ति। यथा- **"सद्मपार्थिवम्"**[12]**, "मृण्मयं गृहं"**[13] यत्तु स्पष्टया तेषां भित्तिभि: सम्बन्धितमस्ति। अनेकस्थानेषु सहस्रस्तम्भेषु स्थितस्य भवनस्य सभाया: वा वर्णनमपि प्राप्यते। तद् गृहं ध्रुवोत्तमं परिकीर्तितमस्ति।[14] एवं प्रकारेण सहस्रद्वारविषयेऽपि तत्र चर्चा प्राप्यते । यथा –

"बृहन्तं मानं वरुण स्वधाव: सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ।"[15]

गृहस्य अन्त: स्थाने प्राङ्गणस्य अथवा अजिरस्य उल्लेखोऽस्ति।[16] वास्तुशब्द ऋग्वेदे पारिभाषिकरूपे भवनस्य तदूतस्थानस्य कृते वा प्रयुक्तो दृश्यते । यथा –

"ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै ।"[17]

अस्मिन् सन्दर्भे गृहस्य अधिष्ठातृदेवाय वास्तोष्पति संज्ञा प्रचलितासीत् ।

वैदिकसाहित्यस्यानुसारं वैदिकयुगे भवननिर्माणस्य आधार: न केवलं काष्ठादय, अपितु मृत्तिका- इष्टिका- पाषाणादयाप्यासन्।[18] ऋग्वेदे एकस्मिन् प्रसङ्गे वरुणेन प्रार्थना कृताऽस्ति यदहं मृत्तिकागृहे न निवसेम इति।[19] अनेन स्पष्टं यत् तस्मिन् युगे मृत्तिकागृहाणि आसन्। उपर्युक्तस्थले निर्मितानां गृहाणां प्राप्तिकामना कृतास्ति।

'त्रिधातु:' मनुष्याणाम् आश्रय: इति ऋग्वेदे वर्णित:।[20] ग्रिफिथस्य मते त्रिधातुशब्दस्याभिप्राय: इष्टिका- शिला- काष्ठै: निर्मितै: भवनैरस्ति।[21] आचार्यसायणेन **"सुवर्णरजतताम्र"** युक्तं गृहं त्रिधातु इति वर्णितम्।[22]

ऋग्वेदानन्तरं गृहसम्बन्धिवर्णनानि अथर्ववेदे अपि प्राप्यन्ते तत्रापि गृहशब्दस्य प्रयोग: दृश्यते यथा- 'वरुणगृह:'[23] "गृहे वसतु"[24] इति।

अथर्ववेदे शालानिर्माणसूक्तमस्ति यत्तु शालाया: गृहनिर्माणस्य वा विवरणदृष्ट्याऽतीव महत्त्वपूर्णमस्ति। तत्र गृहनिर्माणनिर्देशं दत्त्वा उक्तं यत्–

"उपमितां प्रतिमितामयो परिमितामुत।
शालाया विश्वाराया नद्धानि वि चृतामसि।।"[25]

अथर्ववेदे गृहविषयकोपर्युक्तवर्णनेन स्पष्टं भवति यत् तस्मिन् काले नियतपरिमाणानुसारं गृहाणि निर्मीयन्ते स्म । अन्यत्र उक्तं यत् – **"हे शाले ! त्वम् अश्ववतीं गोमतीं श्रेष्ठवाणीयुक्तां भूत्वा अत्र दृढा भवतु । ऊर्जितेन अन्नयुक्तेन उत वा पयोयुक्तेन महत् सौभाग्यं दातुं, उन्नतस्थाने स्थिरा भव।**[26] वैदिक-आर्याणाम् आजीविका मुख्यतया कृषिपशुपालनानि आसन् । अत: प्राचुर्येण तत्र गवादय: पशव: आसन्।" तेषां गृहाणि अश्वगोभि: पूर्णानि आसन् यत्र , घृतधारा: च प्रवहन्ति स्म । तादृशेषु धान्यादिपूर्णेषु गृहेषु ते आनन्देन निवसन्ति स्म ।

वैदिकयुगस्य गृहेषु बहव: कोष्ठका आसन्, यानि भिन्नप्रयोजनाय प्रयुक्ता भवन्ति स्म। अथर्ववेदस्य एकस्मिन् मन्त्रे चतुर्विधा कोष्ठा उल्लिखिता : सन्ति –

"हविर्धानमग्निशाल पत्नीनां सदनं सद:।
सदो देवानामसिदेवि शाले।।"[27]

अत्र उक्तं यद् यथा वैद्य: भग्नभागान् संयोज्य दृढं करोति तथा एव गृहसामग्रीणां सङ्ग्रहं कृत्वा गृहाणि दृढानि दीर्घायुष: युक्तानि च भवन्ति इति उक्तम्।[28] अथर्ववेद एव गृहोपमा अलङ्कृतेन गजेन दत्ता।[29] सम्भवत: तदा गृहाणां बाह्याभ्यन्तरभित्ति: विशेष प्रकारकै: चित्रै: रञ्जिता भवति स्म अत: एकस्मिन् स्थाने गृहस्य तुलना सुन्दरवध्वा भवति।[30] अस्मिन् सरलकुटीरत: विशालभवनपर्यन्तं प्रत्येकं प्रकारस्य गृहस्य उल्लेख: कृतोऽस्ति। अत्र द्विपक्ष:, चतुष्पक्ष:, षट्पक्ष: इत्यादय: शाला अपि वर्णिता: सन्ति।[31] पाषाणनिर्मितभवनान्यपि तदा भवन्ति स्म।[32] अथर्ववेदस्य मन्त्रेभ्य ज्ञायते यद् गृहस्य शालाया: वा आधार: अतीव सुदृढ: स्थापितो भवति स्म, येषां निर्माणे प्रस्तरादीनां प्रयोगस्य संकेता: समुपलभ्यन्ते।[33]

अनेन प्रकारेण वैदिककाले गृहादिकानां व्यवस्था वास्तुशास्त्रा-नुरूपमासीदियनुमीयते। वैदिकगृहाणां मूलसंकल्पनां स्वीकृत्यैव पश्चाद्वर्तिकाले गृहादिकानां रचना जाता । अत: कथयितुं शक्यते यद् वैदिकगृहनिर्माणस्यावधारणा एव वास्तुकलाया: मूले अवतिष्ठ-त्येवेति।

पाद टिप्पणी -

[1] भारतीय वास्तुकला,पृष्ठ-३

[2] सुरणं गृहे ते- ऋग्वेद, ३.५.३.६ , दाशुषो गृहे- ४.४९.६, ८.१०.१

[3] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, अ.-२ , पृ.-४७

[4] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, अ.-२ , पृ.-४७

[5] मनो अस्या अन आसीद्योरासीदुतच्छदि:। शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात्सूर्या गृहम् । । - ऋग्वेद , १०.८५.१०

[6] बृहन्तं क्षयं असमं जनानां – ऋग्वेद १०.४७.८

[7] चास्कम्भ चित् कम्भेन स्कभीयान् – ऋग्वेद, १०.१११.५९

[8] त्रय: स्कम्भास: स्कभितास: - ऋग्वेद , १.३४.२

[9] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु , अ.-०२ (ऋ.-२.१५.२ उद्धृत)

[10] स्कम्भं धरुण , ऋ.-१०.४४.४

[11] स हि श्रवस्यु: सदनानि कृत्रिमा क्ष्मया वृधान ओजसा विनाशयन्।
-ऋ. – १.५५.६

[12] (क).अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्म पार्थिवम् ।
अरेजन्त प्र मानुषा: ।। - ऋ.- १.३८.१०
(ख). ते रुद्रास: सुमखा अग्नयो यथा तु विद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत्।
दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा मह: शर्धास्य-
द्भुतैनसाम् ।। - ऋ.- ५.८७.७

[13] मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् । -ऋ. – ७.८९.१

[14] (क) राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते।।
- ऋग्वेद , २.४१.५
(ख) समिधान सहस्रजिदग्रे धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्य :
।। , ऋग्वेद – ५.२६.६

[15] ऋग्वेद – ७.८८.५

[16] त्वामीकते अजिरं दूत्याय हविष्मन्त: सदमिन्मानुषास:।
- ऋ.- ७.११.२

[17] ऋग्वेद – १.१५४.६

[18] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु , पृ.- ४९

[19] (क) अथ स्वनान्मरुतां विश्वमा सम पार्थिवम् । ऋ.- १.३८.१०
(ख)दीर्घ पृथु पप्रथे सम पार्थिवं सेवामज्मेष्वा मह:
शर्धास्यद्धतैनसाम्। - ऋ.- ५.८७.७

[20] इन्द्र त्रिधातुशरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च महह्यं च यावया दिधुमेभ्य:।।
- ऋ. -६.४६.९

[21] भारतीयवास्तुशास्त्रस्य इतिहास:, अ.- १, पृ.- ४१

[22] तथैव

[23] अप्सु ते राजन्वरुण गृहो हिरण्ययो मिथ ।
ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु।। - अथर्ववेद-७.८३.१

[24] हिरण्यस्रगयं मणि: श्रद्धां यज्ञं महो दधत् ।
गृहे वसतु नोऽतिथि: ।। - अथर्ववेद-१०.६.४

[25] अथर्ववेद-९.३.१

[26] इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शाले चावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय।।
ऋ.- ३.१२.२

[27] अथर्ववेद- ९.३.७

[28] आ ययाम से बंबई ग्रन्थींश्चकार ते दृढान् ।- अथर्ववेद

[29] मिता पृथिव्यां तिष्ठसि हस्तिनीव पद्धती। अथर्ववेद–९.३.१७

[30] वधूमिन त्वा शाले यत्रकामं भरामसि । अथर्ववेद- १.३. २५

[31] या द्विपक्षा चतुष्पक्षा षट्पक्षा या निमीयते ।
अष्टपक्षां दशपक्षां शालां मानस्य पत्नी मग्निगर्भ इवा शये।
अथर्ववेद-९.३.२९

[32] अश्मवर्म मेडसि.....। अथर्ववेद-५.१०.१-७

[33] इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठाति घृतमुक्षमाणा।
त्वां त्वा शाले सर्ववीराः सुवीरा अरिष्टवीरा उप संचरेम।
इहैव धुव्रा प्रति तिष्ठ शालेड श्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय ।।
- अथर्ववेद- - ३.१२.१-२

१ माणिक
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभ
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ गुड़
९ घी

मध्येवर्तुल व. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ५ रा. स्वा. जप ७०००

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

१ वंशपात्र
२ तंदुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
९ घृतकुंभ

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क स्वामी जप ११०००

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसुर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
९ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १००००

ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

१ कन्य
२ पीताम्बर
३ सुवर्ण
४ कांस्य
५ मुग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्ती

ईशान्ये बाणाकारमंडले मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट
युक्त केतकी चित्रापक्षीय (दृग्गणित)

श्री संवत् २०७७ का कीर्तिपञ्चांग

शकः १९४२ सन् २०२०-२०२१

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

१ शर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतध्वा
५ पीत व.
६ पुष्पम
७ लवण
८ कांच
९ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमंडले अ. ६ सिंधु देश अंगिरस गोत्र पी. वर्ण ९।१२ जप १९०००

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

१ चित्र व
२ श्वेताश्व
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ श्वेतचन्दन
९ सुगंधी

पूर्वे पंचकोणमंडलाकारे २।७ रा. स्वा. भो. कटदेश भार्गवगोत्र श्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कृष्णिका
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इंद्रनील
९ कृष्णाश्व
१० गौ

पश्चिमे धनुकार पं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा.स्वामी जप २३०००
कटदेश भार्गवगोत्र श्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

१ गोमेद
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंबल
६ तिल
७ तैल
८ लोह
९ अभ्रक
१० सुना

नैऋत्ये शूर्पाकारमंडले अ. १२ राठीय शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

१ वैदूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंबल
५ कस्तूरी
६ शाख
७ कृष्णा
८ छाग
९ गोधूम

पश्चिमे ध्वजाकार मंडले ०० आवंतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

महीधरोदितं पञ्चांग देशान्तरैः। संस्कृत्याभीष्ट देशीयं [illegible]

वर्ष १३७

पञ्चांग प्रवर्तक

पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी
१४ फरवरी १८४९ - १५ मई १९१५

समर्पणम् : महीधरो कीर्ति पञ्चाङ्ग महाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के अनपिस्मरणीय नाम से श्री संवत् १६४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश चर्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्म महाराजाधिराज नरेन्द्र शाह देव- मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अतः स्वर्गीय राजर्षि की अनपिस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक को यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।

पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता
पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी
नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

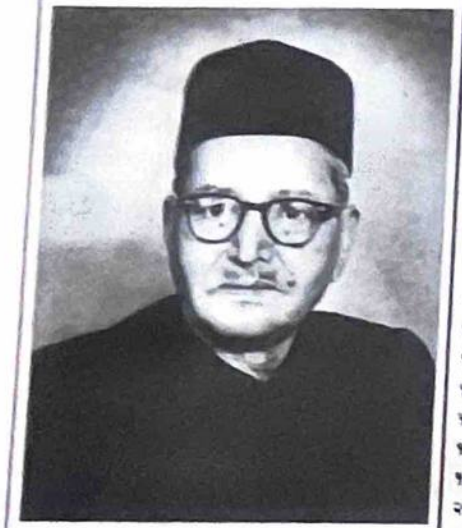

१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९९६

विषय सूची

क्रम		पृष्ठ
१.	नवग्रह एवं जप संख्या	मुख पृष्ठ
२.	सम्पादकीय	१
३.	कीर्ति पचांग प्रवर्तक परिचय	२
४.	राशिफल २०२०-२१	३-२७
५.	संवत्सरादिफलम् शनि का साडेसाती-ढैय्याविचार	२८-३०
६.	मूल पंचांग	३१-५६
७.	व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७७	५७
८.	सन् २०२०-२१ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि	५८-६७
९	विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७७ (२०२०-२१), ग्रहण विवरण	६८-६९
१०.	गोदान विधि	७०-७२
११.	षोडशोपचार पूजन यज्ञोपवीतधारण प्रयोग, जन्मदिन पूजनम्	७२-७६
१२.	तर्पण प्रयोग विधि	७७-७९
१३.	विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि अन्य फलम्	८०
१४.	तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, दग्धस्थल प्रवेश सारिणी	८१
१५.	गढ़वाल लग्न सारिणी	८२
१६.	देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	८३
१७.	उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	८४
१८.	सप्तवर्ग चक्रम्	८५
१९.	त्रिवर्ग चक्रम्	८६
२०.	वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, होड़ा चक्रम सारिणी	८७-८८
२१.	क्रान्ति सारिणी एवं चरसारिणी	८९-९०
२२.	वेलान्तर सारिणी, तत्रिके हड्डा चक्रम वास्तु प्रकरण	९१-९२
२३.	संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त	९३-९६

श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पचांग विगत १३६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वांछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियो, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानो ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पचांग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष सवत् २०७७, का यह १३७ वॉ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष-विवरण के साथ तिथिवार घण्टा-मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियो के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।
२. प्रत्येक दिवस को तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।
३. चन्द्रमा का किस राशि मे कब प्रवेश होगा, यह भी घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में प्रदर्शित किया गया है।
४. देश/प्रदेश के प्रमुख त्यौहारो व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A,B,C.... तारांकित कर नीचे अंकित किये गये है।
५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा-मिनट मे दिखाया गया है।
६. प्रत्येक सक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा-मिनट मे स्पष्ट किया गया है।
७. पचाग के प्रकाशन में सस्कृत के सरल शब्दो/व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओ को कठिनाई न हो।
८. ग्रहो की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा-मिनट मे इंगित किया गया है।
९. पंचाग मे विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।
१०. पचाग मे पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अंकित की गई है।
११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा-मिनट मे दिया गया है।
१२. इस पचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पचाग के सृजनकर्ताओ का उद्देश्य इसे जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।
१३. सवत् २०७७ के प्रस्तुत पचाग से उपयोगकर्ताओ की सुविधा के लिये निम्नांकित विधियो का भी इसमे समावेश किया गया है-
(क) गोदान (ख) जन्म-दिवस पूजन (ग) यज्ञोपवीत धारण (घ) षोडशोपचार और (च) तर्पण प्रक्रिया। आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पंचाग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

शुभकामनाओं सहित।

महीधर कीर्ति पञ्चांग

सम्पादकीय संरक्षक एवं प्रकाशक

पयोधर डंगवाल

महीधर कीर्ति पञ्चांग कार्यालय

"मेदिनीष"

पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड,

फोन 9812302564

गणित कर्ता एवं सम्पादक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

हरिद्वार-249402

सह सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल (अवैतनिक)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

नई दिल्ली - 110016

शंका समाधान कर्ता

डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिर्विद

फोन 09012968024

एवं

पण्डित रमा नन्द डबराल

आचार्य फलित ज्योतिष

फोन 08057080380

महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी है।

सम्पादकीय

भारतवर्ष के उत्तरदिशा में देवतात्मा हिमालय पर्वत की सुन्दर उपत्यकाओं में बसे हुए उत्तराखण्ड का गढ़वाल क्षेत्र जहाँ एक ओर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से सैलानियों को आकर्षित करता है, वहीं दूसरी ओर अपने चारधामों एवं अन्य तीर्थस्थलों के कारण सदियों से ऋषि–महर्षियों एवं धार्मिकजनों को आध्यात्मिक सुखानुभूति प्रदान करता रहा है। भारत के चारधामों में प्रसिद्ध श्रीबदरीनाथ धाम की महिमा से कौन अनभिज्ञ है? जहाँ स्वयं भगवान श्रीनारायण का नित्यवास है। भगवान बदरीनारायण के तपश्चर्या में निरत स्वरूप के दर्शन कर कौन अपने को कृतकृत्य नहीं मानता ? ऐसे भगवान बदरीनारायण के साक्षात् भक्त, जिनको "बोलान्दा बदरी" भी कहा जाता है, जिन पर अनुदिन प्रभु बदरीनारायण की अनुकम्पा बरसती रहती है, भक्ति, श्रद्धा एवं विश्वास की त्रिवेणी से ओत प्रोत गढ़वाल के महान शासकों की परम्परा ने सर्वदा भक्ति की अविरल धारा के साथ – साथ ज्ञान की परम्परा को भी आश्रय प्रदान किया है। जिस कारण गढ़वाल क्षेत्र में ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि विषयों में पण्डितों की सुदृढ़परम्परा दृष्टिगोचर होती है। इसी परम्परा के संवाहक डंगवालोपाख्य पं. श्री महीधर शर्मा धर्माधिकारी थे, जिन्होंने गढ़वाल नरेश माननीय श्री कीर्तिशाह के संरक्षकत्व में ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख लक्ष्य शुद्ध कालगणना पद्धति को जन सामान्य तक पहुंचाने हेतु प्रायः 1883 ईस्वी सन् से गढ़नरेश श्रीकीर्तिशाह को समर्पित कीर्तिपंचाग का ग्रहलाघवीय पद्धति से गणित कर सम्पादन एवं प्रकाशन किया। सम्भवतः यह पंचाग गढ़वाल का सबसे पहले प्रकाशित मुद्रित पंचाग था।

ग्रहलाघवीय पद्धति से प्रकाशित यह कीर्ति पंचांग शनैः शनैः आद्य सम्पादक पं. महीधर शर्मा जी की पुण्यस्मृति में 'महीधरकीर्तिपंचाग' के नाम से भी प्रसिद्ध हो गया परन्तु धीरे धीरे ग्रहलाघव पद्धति की दृक्तुल्यता न दिखाई देने के कारण यह पंचाग भारतीय पंचांग पद्धति पर ही आधारित दृक्तुल्य केतकरीय पद्धति पर निर्मित किया जाने लगा। दृक्तुल्यता का तात्पर्य आकाशस्थ ग्रहादिकों की गणित से साधित ग्रहादिकों के साथ समता होने से है। यदि दृक्तुल्यता न हो तो गणित से साधित ग्रहण, उदयास्तादि विषय आकाशीय स्थिति से मेल नहीं खाते हैं। जिस कारण पंचाग में दिये हुए समय में ग्रहणादि प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। इसी प्रकार प्राचीन सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघवीय आदि पद्धतियों से निर्मित पंचागों एवं नवीन केतकी प्रभृति पद्धति से निर्मित पंचागो के तिथ्यादि में 16 घटी तक का अन्तर दिखाई देने लगता है, जिस कारण व्रत, पर्व, उत्सवादि का निर्णय भी दूषित होने लगता है। इसी कारण अभी कुछ वर्ष पूर्व तक गढ़वाल क्षेत्र में प्रसिद्ध पंचांगों में संक्रान्ति, जन्माष्टमी आदि व्रत, पर्व, उत्सवादि में एक–एक दिन का अन्तर प्राप्त होने लगा था। जिस कारण पण्डितवर्ग एव जनता दिग्भ्रमित सी होने लगी थी तथा ज्योतिषशास्त्र के प्रति अश्रद्धा व अविश्वास सा उत्पन्न होने लगा था। वस्तुतः यदि ग्रह दृक्तुल्य नहीं होंगे तो व्रत, पर्वादि को समुचित समय में न कर पाने के कारण उनका पुण्यफल प्राप्त नहीं हो पाता है। जबकि वेदाग ज्योतिष में शुद्ध कालगणना के महत्व को इस प्रकार कहा गया है–

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।

– वेदांग ज्योतिष 03

वस्तुतः पंचाग गणना की मूल संकल्पना तो अक्षुण्ण है, परन्तु अधिक काल व्यतीत हो जाने पर गणित लाघव हेतु स्वल्पान्तर से छोड़ी हुई संख्या अधिक हो जाती है जिस कारण ग्रहगणित में भी स्थूलता दिखाई देने लगती है। इसी प्रकार युग परिवर्तन होने पर ग्रहनक्षत्रादि की स्थिति में भी कुछ अन्तर पड़ जाता है, जिसे दूर करने के लिए कुछ विशेष संस्कार करने पड़ते है। इसी कारण दृक्तुल्यता हेतु वेधप्रकिया अपनाते हुए कई ग्रन्थों की रचना आचार्यों ने समय समय पर की है। अतः सूर्यसिद्धान्त में कहा गया है –

युगे युगे महर्षीणां स्वयमेव विवस्वता।

–सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 08

और भी –

युगानां परिवर्तन कालभेदोऽत्र केवलः।।

– सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 09

अतः हमारे आचार्यों ने इसी कारण दृक्तुल्यता को अधिक महत्व दिया है। प्रसिद्ध सूर्यसिद्धान्त स्वयं कहता है कि –

तत्तद्गतिवशान्नित्य यथा दृक्तुल्यता ग्रहाः
प्रयान्ति तत्प्रवक्षामि स्फुटीकरणमादरात्।।

–सूर्यसिद्धान्त स्पष्टाधिकार श्लोक 14

सिद्धान्तशिरोमणि में भास्कराचार्य जी भी कहते है –

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलं स्फुटत्वम्।
स्यात् प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।

– सिद्धान्तशिरोमणि स्पष्टाधिकार श्लोक 01

ग्रहलाघव ने व्रत–पर्वादि निर्णय में दृग्गणितैक्यता को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है कि –

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जो गुरुस्त्वार्यजो–
ऽसृग्राहू च कजं ज्ञकेन्द्रकमथार्य्यो सेशुभागः शनिः।
शौक्रं केन्द्रमजार्य्यमध्यगमितीमे यान्ति दृक्तुल्यतां,
सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्म्मनयसत्कार्य्यादिकं त्वादिशेत्।।

–ग्रहलाघव मध्यमाधिकार श्लोक 16

इन्हीं आचार्यवचनो को ध्यान में रखकर प्राचीन भारतीय पंचाग गणित को अपने समय दृक्तुल्य न देखकर उन्नीसवी सदी के आरम्भ में आचार्य बापूजी केतकर ने चित्रा नक्षत्र से 180 अंश की दूरी पर स्थित आकाशीय बिन्दु को राशिचक्र का आरम्भ मानकर भारतीय अहर्गणादि विधि के आधार पर चित्रापक्षीय 'केतकी ग्रहगणित' पंचांग पद्धति की रचना की। जिससे साधित ग्रह आज भी दृक्तुल्यता को प्राप्त करते हैं। अतः शास्त्रसम्मत चित्रापक्षीय केतकीय विधि के आधार पर 'महीधरकीर्ति पंचाग' का यह अंक सुधी विद्वज्जनो के करकमलो में समर्पित है।

यह पचाग 30 अंश 15 कला उत्तरी अक्षांश तथा 79 अंश 30 कला पूर्वी रेखांश पर आधारित है। इस पचाग में सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रराशि प्रवेश का समय घण्टा, मिनट में भारतीय मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) के अनुसार दिये गये हैं। साथ ही व्रतपर्वादि विवरण, ग्रहों का मार्गत्व, वक्रत्व, उदयास्त, ग्रहण आदि विवरण भी भारतीय मानक समय के अनुसार ही हैं। अतः यह पचांग समस्त भारत में समान रूप से उपयोगी है। ग्रहों की दैनन्दिन स्थिति सूर्योदय के अनुसार है, जिसे "औदयिकाः रव्यादिस्पष्टग्रहाः" कहकर निर्दिष्ट किया गया है। इस प्रकार इस पचाग को पण्डितजन एव सामान्य जनता के लिए अधिक उपयोगी बनाये जाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि सुधीजन इस पचाग की मुद्रणादि त्रुटियो का परिमार्जन करते हुए उपयोगी विषयों से लाभान्वित होंगे, साथ ही बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराने पर हमें प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र सज्जनाः समादधति।।

ISSN- 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

राजा-बुध

विक्रमसंवत् - २०७७

कलिसंवत् - ५१२१

मन्त्री-चन्द्र

शकसंवत् - १९४२

ईसवीय - २०२०-२०२१

प्रधान सम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली-१६

प्रधान सम्पादक

प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, पूर्वसंकाय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता

प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड़ संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड़

© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक

प्रो० मीनाक्षी मिश्र

(अवैतनिक)
आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

सहसम्पादक

डॉ० अशोक थपलियाल

(अवैतनिक)
सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

प्रकाशन सहायक- डॉ.प्रवेशव्यास, डॉ.देशबन्धु (अवैतनिक)
सम्पादन सहयोग- मृत्युञ्जय त्रिपाठी, भगवतीप्रसाद त्रिपाठी, डॉ. योगेन्द्रकुमार शर्मा, डॉ.दीपक वशिष्ठ, डॉ.नवीन पाण्डेय,अव्यक्त रैणा,अश्वनीकुमार

प्रकाशक

नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई,
RZG-271, पालम कॉलोनी नई दिल्ली-77

मुख्य कार्यालय

नैसर्गिक शोध संस्था
38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2020 ई., **पुष्प** - षष्ठ **मूल्य** - रु. 70/-

उपहार

पंचांग परिचय

अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पंचांग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पंचांग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पंचांग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पंचांग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पंचांग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पंचांग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पंचांग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥ - सम्पादक

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या
1.	पञ्चांग परिचय	01
2.	मंगलवाक्	03
3.	संवत्सरादिफलम्	04–08
4.	वार्षिकराशिफल	09–37
5.	सायन सूर्य राशि व नवग्रहस्तोत्रम्	37
6.	ग्रहण विवरण(2018–19)	38
7.	ग्रहों का राशि प्रवेश काल	39
8.	ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल	40
9.	व्रत, पर्व एवं उत्सवादि	41–45
10.	सूर्यसंक्रान्तिपुण्यकाल	45
11.	विविध शुभ योग	46–48
12.	पंचाग–तिथ्यादिविवरण	49–74
13.	औदयिक स्पष्टग्रह	75–88
14.	ग्रहों का उदयास्त विचार	89
15.	ग्रह मार्गी–वक्री विचार	89
16.	अक्षांश–रेखांश सारिणी	90–96
17.	ज्योतिषमाहात्म्यम्	96
18.	क्रांति सारिणी	97
19.	चरसारिणी	98–99
20.	वेलान्तर सारिणी	100
21.	दैनिक लग्नसारिणी	101–112
22.	दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी	113
23.	दशमलग्नसारिणी	114
24.	मुहूर्त्त हेतु काल विवरण	115
25	विवाह मुहूर्त्त	116–117
26.	गोधूलि प्रशंसा	117
27.	वधूप्रवेश मुहूर्त	118
28.	द्विरागमन मुहूर्त	118
29.	प्रसूतास्नान मुहूर्त	118–120
30.	नामकरण मुहूर्त	120–122
31.	अन्नप्राशन मुहूर्त	122
32	चूडाकर्म मुहूर्त	123
33.	कर्णवेध मुहूर्त	123–124
34.	उपनयन मुहूर्त	124
35.	अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त	124–125
36.	विपणि मुहूर्त	125–126
37.	सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त	126–127
38.	हलप्रवहण मुहूर्त	127–130
39.	बीजोप्ति मुहूर्त	130–132
40.	गृहारम्भ मुहूर्त	132
41.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	132–133
42.	ग्राम वास विचार	134
43.	विविध मुहूर्तों का विचार	134–145
44.	खात व काकिणी विचार	145
45.	विभिन्न शुभाशुभ योग विचार	146
46.	गण्डमूल बोधक चक्र	146
47.	षोडश कक्ष विचार	146
48.	विंशोत्तरी दशा–अन्तरदशा चक्र	147
49.	योगिनी दशा–अन्तरदशा चक्र	147
50.	ग्रहमैत्री एवं उच्च–नीच विचार	147
51.	कुण्डलीस्थ ग्रह फल	148
52.	गोचर वश ग्रह फल	149
53.	वर्ष–कुण्डली के ग्रह फल	149
54.	शतपद चक्र	150
55.	मेलापक विचार	151
56.	मेलापक सारिणी	152–155
57.	वर्षफल निर्माण विधि	156–160
58.	गोदान विधि	161–167
59.	यज्ञोपवीत धारण विधि	167–168
60.	सन्ध्याविधि	169–172
61.	षोडशोपचार पूजन विधि	173–179
62.	तर्पण प्रयोग	179–184
63.	पुरुषसूक्त,श्रीसूक्त,रुद्रसूक्त	185–187
64.	चौघड़िया मुहूर्त्त	188
65.	अग्निवास व शिववास विचार	188
66.	गण्डमूल नक्षत्र–चरण फल	188
67.	सूर्योदय व इष्टकाल साधन	189–190
68.	ग्रहदान वस्तुएं व अंगस्फुरण फल	191
69.	नवग्रह शांति उपाय	192

संवत्सरादिफलम् 2020-21 ई.

कलियुगाब्द	५१२१	ईसवी सन्	२०२०-२१
फसली	१४२७-२८	शालिवाहन शक	१९४२
हिजरी	१४४१-४२	विक्रम संवत्	२०७७
सप्तर्षिसंवत्	५०९६	महावीरजैननिर्वाणसंवत्	२५४५-४६
श्रीबुद्धसंवत्	२६४३-४४	भारतीय गणराज्यवर्ष	७०-७१

वर्षाविकृत्य -

अब्दादौ प्रातरुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम् ।

स्नानं सन्ध्याविधिं कृत्वा वर्णाचारक्रमेण तु ॥

अब्दादौ मित्रसंयुक्तो मङ्गलस्नानमाचरेत् ।

वस्त्रैराभरणैर्देहमलङ्कृत्य ततश्शुचिः ॥

अब्दादौ ग्रहपूजाञ्च पूजाञ्च चिरजीविनाम् ।

मिष्टान्नेन द्विजान् बन्धून् पितश्न् सन्तर्पयेत्ततः ॥

वर्षारम्भ के दिन प्रातःकाल में दन्तधावनादि कार्योपरान्त मंगलस्नान करके सन्ध्यादि कृत्य पूरा करने के बाद नववस्त्र धारण करके ग्रहादि का पूजन करना चाहिए। साथ ही बन्धुजन, ब्राहम्ण और पितरों को मिष्टान्नादि से संतश्प्त करना चाहिए।

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगश्हे कुर्याद्ध्वजारोपणम् ।

स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ॥

देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवालङ्कारवस्त्राविभिः ।

सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥

परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः ।

सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥

मरीचिलवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम् ।

अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये ॥

यद् वर्षादौ निम्बसुमं शर्कराम्लघृतैर्युतम् ।

भक्षितं पूर्वयामे स्यात् तद्वर्षं सौख्यदायकम् ॥

संवत्सरावि फल श्रवण का माहात्म्य-

राज्यं स्यादचलं नश्पश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलम् ।

धान्येशात् कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात् ॥

धर्मे बुद्धिरधिष्ठता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत् ।

सस्येशाद् विमला मतिः शुभकरी वर्षावली श्रूयताम् ॥

वर्षारम्भ में संवत्सर के राजा का फल सुनने से राज्य स्थिर होता है। मत्री का फल सुनने से कुशलता बढ़ती है। धान्येश का फल श्रवण से लक्ष्मी स्थिर होती है। मेघपति का फल सुनने से वाणी रम्या होती है। रसपति के फल श्रवण से दीर्घायु मिलती है। अतः शुभ एवं कल्याणकारी वत्सरावली का श्रवण करना चाहिए।

संवत्सरादि फलश्रवणविधि-

उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवज्ञस्य तु सन्निधौ ।

विघ्नेशं भारतीं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणान् गुरून् ॥

सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम् ।

विकासववदनो भूत्वा ब्रह्मणो जन्मतः फलम् ॥

अब्दाधीशचमूनाथसस्यापानां बलाबले।

तत्कालग्रहचारांश्च सम्यक् ज्ञात्वा फलं लभेत।

दैवज्ञ के समीप में पूर्वमुख यां उत्तरमुख होकर गणेश,सरस्वती,नवग्रह,गुरू,ब्राह्मण आदि का पूजन करके सांगोपांग वर्ष का फल सुनना चाहिए।

ब्रह्मायुर्निरूपणम् - श्रीमद्भगवतो विष्णोः नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुः १०० वर्षाणि। ३११०४०००००००००० सौरवर्षाणि ब्रह्मणः परमायुः। ब्रह्मणः जन्मादिगतसौरवर्षाणि १५५५२१९७२९४९१२१ कल्पादितः गतसौरवर्षाणि १९७२९४९१२१ सृष्ट्यादितः गतवर्षाणि १९५५८८५१२१ अथ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्गम्

राजा-मंगल

विक्रमसंवत् - २०७८

कलिसंवत् - ५१२२

संरक्षक

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

नैसर्गिक शोध संस्था

दिल्ली इकाई, नई दिल्ली-१६

मन्त्री-मंगल

शकसंवत् - १९४३

ईसवीय - २०२१-२०२२

प्रधान सम्पादक

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

सह-सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल

वास्तुशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली - 110016

संरक्षक

प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

प्रधान सम्पादक

प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय

कुलपति, श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता

प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक

प्रो० मीनाक्षी मिश्र

आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक

डॉ० अशोक थपलियाल

सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

प्रकाशन सहायक-डॉ० देशबन्धु (सहा. आ.), डॉ० प्रवेश व्यास (सहा. आ.), डॉ० योगेन्द कुमार शर्मा(सहा. आ.),डॉ० दीपक वशिष्ठ(सहा. आ.)

सम्पादन सहयोग -श्री मृत्युञ्जय त्रिपाठी,श्री भगवती प्रसाद त्रिपाठी,श्री गोविन्द वल्लभ

प्रकाशक - वास्तुशास्त्र विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली-110016

नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2021 ई., पुष्प -सप्तम मूल्य - रु. 75/-

पञ्चाङ्ग परिचय

अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाददति सज्जनाः॥ - सम्पादक

वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली - 110016

1. प्रमाणपत्र (प्रवेशिका) : यह षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम स्थापत्य वेद एवं वेदोत्तरवर्ती वास्तुशास्त्र की मूल संकल्पना एवं प्राथमिक जानकारी पर आधारित है।
2. एकवर्षीय डिप्लोमा एवं द्विवर्षीय एडवांस डिप्लोमा : ये दोनों पाठ्यक्रम वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों का जन-जीवन में प्रयोग एवं उपयोग पर आधारित है। इनमें संस्कृत भाषा का भी प्राथमिक ज्ञान दिया जायेगा।
3. शास्त्री (बी.ए.) : यह त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसमें वास्तुशास्त्र का वैदिक परम्परा पर आधारित वास्तुशास्त्रीय मूलभूत संस्कृत भाषा में निबद्ध मानक ग्रन्थो के द्वारा विस्तृत अध्ययन किया जाता है।
4. आचार्य (एम.ए.) : यह द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है जिसमें वास्तुशास्त्र के प्रमुख प्राचीन आधारभूत मानक ग्रन्थों का विस्तृत और गम्भीर विषयों का प्रायोगिक अध्ययन किया जाता है।
5. विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) : यह एकवर्षीय शोधात्मक पाठ्यक्रम है,जिसमें वास्तुशास्त्र के गम्भीर व लोकोपयोगी विषयों पर अनुसन्धान द्वारा नवीन तथ्यों की खेज की जाती है।
6. विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) : वास्तुशास्त्र के गम्भीर, जटिल एवं लोकोपयोगी विषयों पर अनुसन्धान के माध्यम से नवीन तथ्यों की अन्वेषण एवं लोककल्याण के लिये यह गवेषणात्मक पाठ्यक्रम चलाया जाता है।
7. पी.जी.डिप्लोमा : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा मान्यता प्राप्त नवीकरण कार्यक्रम (इन्नोवेटिव प्रोग्राम) के तहत 2004 से द्विवर्षीय स्नातकोत्तरवास्तुशास्त्रोपाधि (पी.जी. डिप्लोमा) पाठ्यक्रम चल रहा है।

नोट- विश्वविद्यालय द्वारा संचालित उक्त सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया जुलाई में विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों के अनुरूप सम्पन्न होती है। वास्तुशास्त्र द्वारा षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय, एकवर्षीय एवं द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की कक्षायें शनिवार एवं रविवार को सञ्चालित की जाती हैं। शेष पाठ्यक्रम सोमवार से शुक्रवार को विद्यापीठ के कार्य दिवसों में सम्पन्न किये जाते हैं।

माहीधरीदं पञ्चांग देशान्तरे। संस्कृत्याभीष्ट देशीयं भविष्यति न संशय॥

वर्ष १३८

पञ्चांग प्रवर्तक

पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी

१४ फरवरी १८४६ - १५ मई १६१५

---

१ माणिक
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभा
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ धृत
६ गौ

मध्येवर्तुल म. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ५ रा. स्वा. जप ७०००

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

---

१ वंशपाल
२ तंदुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
६ धृतकुंभ

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क- स्वामी जप ११०००

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

---

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
६ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १००००

ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

---

१ वस्त्र
२ नीलव
३ सुवर्ण
४ कास्य
५ मृग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
६ हस्ती

ईशान्ये वाणाकारमंडले मगधदेश आत्रैयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट
युक्त केतकी चित्रापक्षीय (दृग्गणित)

श्री संवत् २०७८ का महीधर कीर्तिपञ्चांग

शकः १६४३ सन् २०२१-२०२२

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

---

१ सर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतधा
५ परत व.
६ पुष्पस
७ लवण
८ कांच
६ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमंडले अ. ६ सिंध देश अंगिरस गोत्र पी. घण ६।१२ जप १६०००

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

---

१ चित्र व
२ श्वेतघो
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ भक्ष्यक
६ सुगंधी

पूर्वेपंचकोणमंडलाकारे २।७ रा. स्वा. भो. कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

---

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इंद्रनील
६ कृणाव
१० गौ

पश्चिमे धनुषाकार मं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा.स्वामी जप २३००० कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

---

१ मेढ़
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंवल
६ तिल
७ तैल
८ लौह
६ अभ्रक
१० सुता

नैऋत्ये शूर्पाकामंडले अ. १२ राठीन शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

---

१ वैडूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंवल
५ कस्तूरी
६ शंख
७ कृष्ण
८ माष
६ गोधूम

पवायव्ये ध्वजाकार मंडलेअ० आवंतिदेश जैमिनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

समर्पणम् : महीधरो कीर्ति पञ्चाङ्ग गढ़ाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के जगच्चिरस्मरणीय नाम से श्री संवत् १९४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश चर्य्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्म महारा[illegible] देव-मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अतः स्वर्गीय राजर्षि की जगच्चिरस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक को यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।

पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता

पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी

नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

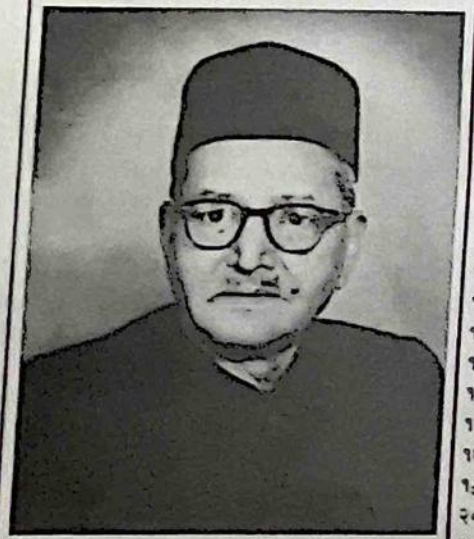

१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९६६

विषय सूची

क्रम		पृष्ठ
१.	नवग्रह एवं जप संख्या	मुख पृष्ठ
२.	सम्पादकीय	१
३.	कीर्ति पंचांग प्रवर्तक परिचय	२
४.	राशिफल २०२१-२२	३-२६
५.	संवत्सरादिफलम् शनि का साढ़ेसाती-ढैय्याविचार	२७-२९
६.	महाकुम्भ पर्व	३०
७.	मूल पंचांग	३१-५४
८.	व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७७	५५-५६
९.	सन् २०२१-२२ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि	५७-६८
१०	विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७८ (२०२१-२२), ग्रहण विवरण	६९-७४
११.	गोधुलि प्रशंसा	७५
१२.	यज्ञोपवीतधारण प्रयोग, अथ जन्मदिन पूजनम्	७६-८०
१३.	विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि जन्म फलम्	८१
१४.	तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, वर्षफल प्रवेश सारिणी	८२
१५.	गढ़वाल लग्न सारिणी	८३
१६.	देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	८४
१७.	उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	८५
१८.	सप्तवर्ग चक्रम्	८६
१९.	त्रिवर्ग चक्रम्	८७
२०.	वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, होडा चक्रम सारिणी	८८-८९
२१.	क्रान्ति सारिणी एवं चरसारिणी	९०-९१
२२.	वेलान्तर सारिणी, तजिके हड्डा चक्रम वास्तु प्रकरण	९२-९३
२३.	संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त	९४-९७

श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पंचाग विगत १३८ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वांछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियों, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानों ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पंचाग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष संवत् २०७८ का यह १३८ वाँ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष–विवरण के साथ तिथिवार घण्टा–मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियों के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।
२. प्रत्येक दिवस को तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी–पल तथा घण्टा–मिनट में दिखाया गया है।
३. चन्द्रमा का किस राशि में कब प्रवेश होगा, यह भी घटी–पल तथा घण्टा–मिनट में प्रदर्शित किया गया है।
४. देश / प्रदेश के प्रमुख त्यौहारों व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A,B,C..... तारांकित कर नीचे अंकित किये गये हैं।
५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा–मिनट में दिखाया गया है।
६. प्रत्येक संक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा–मिनट में स्पष्ट किया गया है।
७. पंचाग के प्रकाशन में संस्कृत के सरल शब्दों / व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओं को कठिनाई न हो।
८. ग्रहों की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा–मिनट मे इंगित किया गया है।
९. पंचाग मे विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।
१०. पंचाग मे पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अंकित की गई हैं।
११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा–मिनट मे दिया गया है।
१२. इस पंचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पंचाग के सृजनकर्ताओं का उद्देश्य इसे जन–साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।
१३. पंचाग के उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिये कुछ विधियों / प्रक्रियाओं का भी इसमें समावेश किया गया है।

आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पंचाग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

शुभकामनाओं सहित।

महीधर कीर्ति पञ्चां[illegible]

सम्पादकीय संरक्षक एवं [illegible]काशक

पयोधर डंगवाल

महीधर कीर्ति पञ्चांग कार्या[illegible]

"मेदिनीष"

पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत[illegible]ड,

फोन 9812302564

गणित कर्ता एवं सम्पादक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्याल[illegible]

हरिद्वार-249402

सह सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल (अवैतनिक)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

नई दिल्ली -110016

शंका समाधान कर्ता

डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिर्विद

फोन 09012968024

एवं

पण्डित रमा नन्द डबराल

आचार्य फलित ज्योतिष

फोन 08057080380

महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी हैं।

कीर्ति पंचांग प्रवर्तक
पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी
संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुतकर्ता–एस० राजेन टोडरिया,
सम्पादक जनपक्ष आजकल, नई टिहरी (उत्तराखण्ड)

सुविख्यात ज्योतिष विद्या के प्रगाढ़ विद्वान सिद्ध तान्त्रिक एवं कीर्ति पंचाग के प्रवर्तक पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी उत्तराखण्ड के ही नहीं अपितु विश्व के सुप्रसिद्ध विद्वानों में एक प्रमुख स्थान रखते हैं। वे विश्व तान्त्रिक संघ जिसका मुख्यालय अमेरिका में था उसके अध्यक्ष भी रह चुके थे।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी का जन्म पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के निकट ग्राम कोदार में १४ फरवरी १८४६ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पौडी के निकट क्यंकालेश्वर सस्कृत विद्यालय में हुई, और वहीं पर रहकर उन्होंने क्यंकालेश्वर शिव–मन्दिर में उपासना कर तान्त्रिक शक्ति प्राप्त किया। टिहरी गढवाल के तत्कालीन नरेश श्री १०८ महाराज प्रताप शाह ने विलक्षण विद्वता और व्यक्तित्व को देखते हुए पण्डित महीधर शर्मा को अपना धर्म गुरु बना कर **धर्माधिकारी** की उपाधि से अलकृत और उन्हे धर्म से सम्बन्धित अपना निर्णय और दण्ड देने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। आज भी उनके वंशज को धर्माधिकारी की उपाधि का अधिकार प्राप्त है।

तत्कालीन गढ़वाल समाज मे ऐसे विद्वान व्यक्तियों का नाम से सम्बोधित करना उनके प्रति निरादर का भाव प्रकट करना था अतः इनको लाम्बा पण्डित जी के नाम से सम्बोधित करते थे क्योंकि इनकी लम्बाई लगभग ६ फीट से ऊपर थी।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी के पूर्वज पण्डित धर्मीधर जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे सन् ७२३ ए०डी० मे कर्नाटक के सन्तोली क्षेत्र से श्री केदारनाथ, श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर आए। यात्रा से लौट कर वह गढवाल के तत्कालीन राजा को सम्मान देने के लिए उनकी राजधानी श्रीनगर स्थित राज–दरबार में पहुँचे। गढ़वाल के राजा इनकी विद्वता देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्हे श्रीनगर के निकट डाँग गाँव में १७ नाली भूमि जागीर में दिया जो आज भी सरकारी बन्दोबस्त मे इन्द्राज है। पण्डित धर्मीधर डाँग के निवासी हो जाने के कारण इनकी **डँगवाल कौन्डिल्य** गोत्र जाति के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आज भी गढवाल में अधिकतर गाँव जाति के नाम से या जाति गाँव के नाम से प्रसिद्ध है। तत्कालीन सुप्रसिद्ध राजा श्री १०८ महाराज अजय पाल सिंह ने श्री देवलगढ़ स्थित अपनी कुलदेवी भगवती राज राजेश्वरी की पूजा–अर्चना करने का विशेष अधिकार इसी परिवार को दिया जो इसी वंश के पण्डित चक्रपाणी धर, पण्डित श्रुतिधर, पण्डित कीर्तिधर, पण्डित नीधीधर, पण्डित महीधर, पण्डित रोहणीधर, पण्डित मेदिनीधर, पण्डित पृथ्वीधर के जीवन काल तक चलता रहा। पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी की स्मरण–शक्ति विलक्षण थी। यह उन्हें एक ईश्वरीय वरदान बताया जाता है। ग्यारह वर्ष की आयु मे सभी संस्कृत के धर्म–ग्रथ–अमर कोष–बालबोध–मुहूर्त चिन्तामणी आदि ग्रंथ कंठस्थ थे।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी अपने समय के बहुत महान प्रसिद्ध सिद्ध–तान्त्रिक, सिद्धि प्राप्त साधक थे। पूर्व न्यायाधीश एस०एन० काटजू के अनुसार वे विश्व तंत्र संघ जिसका मुख्यालय अमेरिका में था के सर्वोच्च निर्देशक रह चुके थे। बीसवी सदी के प्रारम्भ में अमेरिका का तान्त्रिक संघ इस तंत्र संघ से जुड गया जिसका मुख्यालय भारत में था।

सन् १९३१ मे अमेरिकी तंत्र–संघ के प्रधान पेयरी अर्नाल्ड बर्नांड ने अपने मित्र को पत्र लिखकर इस बात का उल्लेख किया था कि उनके गुरु सैलवीस हैमटी थे, जिनके पिता सीरियन और माता फ्रेंच थी, उन्होंने सैलवीस हैमटी को ६ वर्ष की आयु मे हिमालय पर योग और तंत्र–मंत्र का उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक भारतीय योगी के देख–रेख में सौंप दिया। सैलवीस हैमटी ने २० वर्ष तक इन्हीं भारतीय योगी से ज्ञान प्राप्त किया था। भारत से लौट कर सैलवीस हैमटी तंत्र ज्ञान के सर्वोच्च प्रशिक्षक और संघ के निर्देशक बन गए। पेयरी अर्नाल्ड बर्नांड ने सैलवीस हैमटी के भारतीय गुरु का नाम **महीधर** बताया था। इन्हीं महीधर का उल्लेख स्वामी रामतीर्थ ने श्रेष्ठतम चमत्कारी ज्ञानी के रूप में किया था। टिहरी रियासत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश पण्डित शिवानन्द थपलियाल जी के विशेष आग्रह पर एक दिन अर्द्ध–रात्रि को पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी ने अपनी तान्त्रिक शक्तियों का प्रदर्शन किया। मार्ग–पौष के अर्द्ध–रात्रि के अन्धेरे में मुख्य न्यायाधीश पण्डित शिवानन्द थपलियाल जी यह देखकर अचम्भित हो गए कि उन्हीं के घर के दालान (चौक) में वीभत्स, अंग–प्रत्यंग, उल्टे–सीधे पाँव–दाँत वाले नर–नारियों के समूह में पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी अर्ध–नग्न होकर नृत्य कर रहे हैं। उनकी तंत्र शक्ति के ऐसे कई सौ उदाहरण हैं।

अपने जीवनकाल में पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी ने लगभग ३० ग्रन्थों की रचना की, जिनका सम्बन्ध संस्कृत, ज्योतिष, तंत्र ज्ञान, न्याय और कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है। इनमें मुख्य ग्रंथ मंत्र महोदधि, कर्मकाण्ड समुच्चय, गंगा सागर, वृहत्त जातिका, मुहूर्त चिन्तामणि, नीलकण्ठ, केदार–नाथ माहात्म्य, गोरक्षा पद्धति आदि मुख्य हैं। कुछ हस्त लिखित पाण्डुलिपि अलमारी में बन्द पडी है। यह सभी ग्रंथ तत्कालीन समय में श्रीयुत खेमराज कृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई के आधीन मुद्रित की गईं।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी कीर्ति–पंचाग (जन्त्री) के प्रवर्तक भी रहे। उन्होंने सर्व–प्रथम यह पंचाग हस्त–लिखित (जन्म पत्री के रूप में) तत्कालीन टिहरी नरेश को सम्वत् १९४१ (सन् १८८४) से प्रतिवर्ष भेंट स्वरूप देते [illegible] कालान्तर में श्री 108 महाराज कीर्तिशाह बहादुर [illegible] सम्वत् 1950 (सन् 1892) से अपने प्रबन्ध में [illegible] वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई, से छपवाने का प्रबन्ध कि[illegible] श्री 108 महाराज कीर्तिशाह बहादुर के [illegible] यह पंचांग आज भी **कीर्तिपंचांग** के नाम से [illegible] उत्तराखण्ड में प्रचलित है। पण्डित महीधर [illegible] धर्माधिकारी ने अपने समय में सम्वत् 200[illegible] सम्पूर्ण पचांग की पाण्डुलिपि अपने पौत्र [illegible] मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी के लिए सम्वत् [illegible] (सन् 1915) में छोड़कर चल बसे। पण्डित महीधर शर्मा के पुत्र पण्डित रोहणीधर शर्मा धर्माधिकारी अपने समय में ख्याति प्राप्त मृदंग वादक थे।

पण्डित मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी [illegible] जाने–माने कर्म–काण्डि, तंत्र शास्त्र के [illegible] धर्मशास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के कुशल [illegible] उन्होंने महीधर कीर्ति पचांग में अपनी [illegible] अनुसार नए–नए ऐसे विषयों को सम्मिलित कि[illegible] जो जन–साधारण को लाभप्रद हों। पण्डित मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी को पण्डित [illegible] मोहन मालवीय जी ने इन्दौर ज्योतिष सम्मेलन [illegible] ज्योतिषाचार्य की उपाधि से अलंकृत किया। आज भी पण्डित महीधर शर्मा, पण्डित मेदिनीधर [illegible] धर्माधिकारी के वंशज नरेन्द्रनगर, जनपद टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड) मे रह कर प्रतिवर्ष [illegible] कीर्ति पचांग को प्रकाशित कर जनहित की [illegible] संलग्न है।

।। इति शुभम्।।

१ माणिक
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभा
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ धृत
९ गौ

मध्येवर्तुल म. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ५ रा. स्वा. जप ७०००

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

१ वंशपाल
२ तंदुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
९ घृतकुंभ

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क- स्वामी जप ११०००

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
९ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १००००

ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

१ वस्त्र
२ नीलव
३ सुवर्ण
४ कास्य
५ मृग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्ती

ईशान्ये वाणाकारमंडले मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट युक्त केतकी चित्रापक्षीय (दृग्गणित)

श्री संवत् २०७९ का महीधर कीर्तिपञ्चांग

शकः १९४४ सन् २०२२-२०२३

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

१ सर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतधा
५ परत व.
६ पुष्पस
७ लवण
८ कांच
९ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमंडले अ. ६ सिंध देश अंगिरस गोत्र पी. वण ६।१२ जप १९०००

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

१ चित्र व
२ श्वेतधो
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ भक्ष्यक
९ सुगंधी

पूर्वेपंचकोणमंडलाकारे २१७ रा. स्वा. मो. कट्टदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इंद्रनील
९ कृणाव
१० गौ

पश्चिमे धनुषाकार मं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा.स्वामी जप २३००० कट्टदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

१ मेढ़ा
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंवल
६ तिल
७ तैल
८ लौह
९ अभ्रक
१० सुता

नैऋत्ये शूर्पाकामंडले अ. १२ राठीन शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

१ वैदूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंवल
५ कस्तूरी
६ शंख
७ कृष्ण
८ माष
९ गोधूम

पवायव्ये ध्वजाकार मंडलेअ० आर्वतिदेश जैमिनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

महीधरीदं पञ्चांग देशान्तरे। संस्कृत्याभीष्ट देशीयं भविष्यति न संशय॥

वर्ष १३९

पञ्चांग प्रवर्तक

पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी

१४ फरवरी १८४९ - १५ मई १९१५

समर्पणम् : महोत्तरी कीर्ति पञ्चाङ्ग गढ़ाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के जगच्चिरस्मरणीय नाम से श्री सवत् १९४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश चर्य्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्म महाराजाधिराज नरेन्द्र शाह देव-मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अत: स्वर्गीय राजर्षि की जगच्चिरस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक की यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।

पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता

पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी

नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९९९

विषय सूची

क्रम		पृष्ठ
१.	नवग्रह एवं जप संख्या	मुख पृष्ठ
२.	सम्पादकीय	१
३.	कीर्ति पंचाग प्रवर्तक परिचय	२
४.	राशिफल २०२२-२३	३-२६
५.	संवत्सरादिफलम् शनि का साढेसाती-ढैय्याविचार	२७-३०
६.	मूल पंचाग	३१-५४
७.	व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७९	५५
८.	सन् २०२२-२३ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७९ (२०२२-२३), ग्रहण विवरण	५६-७२
९.	विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि जन्म फलम्	७३
१०.	तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, वर्षफल प्रवेश सारिणी	७४
११.	गढ़वाल लग्न सारिणी	७५
१२.	देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	७६
१३.	उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी	७७
१४.	सप्तवर्ग चक्रम्	७८
१५.	त्रिवर्ग चक्रम्	७९
१६.	वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, छोडा चक्रम सारिणी	८०-८१
१७.	क्रान्ति सारिणी एवं धरसारिणी	८२-८३
१८.	बेलान्तर सारिणी, तजिके हड्डा चक्रम वास्तु प्रकरण	८४-८५
१९.	संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त	८६-८९
२०.	अथ बृहद्गोदानविधि, षोडशोपचार पूजन विधि, यज्ञोपवीत धारण प्रयोग, अथ जन्मदिन पूजनम्	९०-९६
२१.	पितृ ऋण से मुक्ति का मार्ग	कवर

श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पचांग विगत १३६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वाछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियों, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानों ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पचाग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष सवत २०७९ का यह १३६ वाँ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष-विवरण के साथ तिथिवार घण्टा-मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियों के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।

२. प्रत्येक दिवस को तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।

३. चन्द्रमा का किस राशि में कब प्रवेश होगा, यह भी घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में प्रदर्शित किया गया है।

४. देश/प्रदेश के प्रमुख त्यौहारों व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A,B,C .... ताराकित कर नीचे अंकित किये गये हैं।

५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।

६. प्रत्यक सक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा-मिनट में स्पष्ट किया गया है।

७. पचाग के प्रकाशन मे सस्कृत के सरल शब्दों/व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओं को कठिनाई न हो।

८. ग्रहों की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा-मिनट मे इगित किया गया है।

९. पचाग में विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।

१०. पचाग में पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अकित की गई हैं।

११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा-मिनट मे दिया गया है।

१२. इस पचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पचाग के सृजनकर्ताओं का उद्देश्य इसे जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।

१३. पचाग के उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिये कुछ विधियों/प्रक्रियाओं का भी इसमे समावेश किया गया है।

आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पचाग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

शुभकामनाओं सहित।

महीधर कीर्ति पञ्चांग

सम्पादकीय संरक्षक एवं प्रकाशक

पयोधर डंगवाल

महीधर कीर्ति पञ्चाग कार्यालय

"मेदिनीष"

पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड,

फोन 9812302564

गणित कर्ता एवं सम्पादक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

हरिद्वार-249402

सह सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल (अवैतनिक)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

नई दिल्ली -110016

शंका समाधान कर्ता

डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिषाचार्य

फोन 09012968024

एवं

पण्डित रमा नन्द डबराल

आचार्य फलित ज्योतिष

फोन 08057080380

महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी हैं।

वार्षिक राशिफल २०२२-२३

मेष राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

अप्रैल – इस माह आप अपने अंदर आत्म-विश्वास की अनुभूति महसूस करेंगे और खुद को साहसी भी पाएंगे। अपनी मेहनत व सकारात्मक व्यवहार के ज़रिए आप सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे और यदि आपको पदोन्नति या वेतन बढ़ने की उम्मीद है तो आपकी इच्छा इस अवधि के दौरान पूरी हो सकती है। इन कुछ अच्छे परिणामों के साथ-साथ आप कुछ बुरे लोगों से भी मिल सकते हैं। मां के लिए ये समय थोड़ा कष्टदायी हो सकता है। इस दौरान उन्हें दु:ख का अनुभव हो सकता है या वे किसी बड़ी समस्या में भी पड़ सकती हैं। इसके अलावा घर में आपकी व्यंग्यपूर्ण भाषाशैली और कठोर व्यवहार गलतफ़हमी और असंतोष उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त इस बीच ख़र्चे बढ़ जाएंगे क्योंकि आप घर की आवश्यकताओं के कुछ सामान ख़रीदेंगे। बच्चों से संबंधित जो भी परेशानियां आपको हैं, वो सभी दूर हो जाएंगी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रदर्शन संतोषजनक रहेगा। वाहन चलाते समय आपको सावधानी रखने की आवश्यकता है क्योंकि चोट लगने की संभावना दिखाई दे रही हैं। इस मास १०, ११, १६, २०, २७, २८, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई – व्यापार क्षेत्र से जुड़े जातकों के लिए यह माह बहुत अच्छा रहने वाला है। व्यापार को बढ़ाने का विचार अच्छे परिणाम देगा और आपका व्यापार नई ऊंचाइयों पर पहुंच जाएगा। जिन जातकों ने बैंक में लोन के लिए अर्ज़ी लगा रखी है तो इस दौरान उसे स्वीकृति प्राप्त हो सकती है। कार्यस्थल में आपके द्वारा किए गए प्रयासों और संसाधनों में वृद्धि के संकेत दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान आपके आपके बच्चों के साथ कुछ विवाद हो सकते हैं। इस महीने के शुरू होते ही आपके स्वभाव में अहंकार आ सकता है जिस पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। अपने बच्चों को इतना भी लाड़-प्यार न करें कि वो इसका फायदा उठाने लगें। अपनी संवादशैली, बुद्धि आदि के लिए आपको दोस्तों, सहभागियों व पड़ोसियों से इस दौरान प्रशंसा प्राप्त हो सकती है। इसी माह आप अपने अंदर गुस्से का भाव महसूस करने लग जाएंगे। इस दौरान अपने ऊपर काबू पाएं और गुस्से से बचें, अन्यथा समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस बीच आपके ख़र्चे बढ़ेंगे। इस मास ७, ८, ६, १६, १७, २४, २५, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून – इस महीने के प्रारम्भ में परिवार के कुछ सदस्यों का स्वास्थ्य ख़राब रहने से आप परेशान हो सकते हैं। डॉक्टर, दवाई आदि पर ख़र्चे ज़रूरत से ज्यादा हो सकते हैं। लेकिन ये अवधि बस थोड़े ही समय के लिए है अत: चिन्ता न करें। चीज़ें बहुत जल्दी संपल जाएंगी और आपकी सभी शीघ्र समाप्त हो जाएंगी। आय के नए स्रोत प्राप्त होंगे और बचत भी ज्यादा होगी। आप अपने भीतर सकारात्मकता व मानसिक शांति का अनुभव करेंगे। आपका मन अति सक्रिय हो जाएगा और आपका काम अच्छा होगा। लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे और इस दौरान आप प्रेम संबंधों में भी अपनी रुचि दिखाएंगे। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। ज़मीन-जायदाद खरीदने से पहले सभी बातें अच्छे से साफकर लें। यदि निवेश का प्लान बना रहे हैं तो समय बिल्कुल अनुकूल है। बीते समय में किए गए सभी निवेश इस दौरान लाभदायक फल देंगे। इस मास ३, ४, ५, १२, १३, १४, २१, २२, ३० दिनांक नेष्ट रहेगी।

जुलाई – व्यापार क्षेत्र से जुड़े जातक इस माह अच्छा लाभ कमाएंगे। इस मास आपको किसी विदेशी कंपनी से भी सहयोग प्राप्त हो सकता है। लेकिन साझेदार के साथ काम करते वक्त आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। अपने फैसलों व वित्तीय मामलों को पूरी तरह से सुलझाए रखें अन्यथा कोई समस्या हो सकती है। नौकरी करते हैं और अगर कुछ बदलाव करने की योजना बना रहे हैं तो यह समय इसके लिए ठीक नहीं है, थोड़ा और इंतजार करें। अगर आप नौकरी छोड़ भी देंगे तब भी वक्त वैसा ही रहेगा। तो बेहतर यही है कि अभी जिस नौकरी में हैं, उसी पर ध्यान केंद्रित करें। निजी जीवन में परेशानियां आ सकती हैं लेकिन शांति व खुशी फिर भी बनी रहेगी। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आपको पैसों से संबंधित कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी अपनी व पारिवारिक आय में बढ़ोत्तरी होगी। दूसरों के ऊपर हावी होने का आपका स्वभाव परेशानियों को उत्पन्न कर सकता है। इन्हें दूर करने के लिए संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इस मास १, २, १०, ११, १८, १६, २८, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त – आर्थिक रूप से समय अच्छा रहेगा। बड़े भाई-बहन जो विदेश में अथवा अन्यत्र कहीं दूर कार्यरत हैं, उनकी सहायता से पैसों का आगमन होगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सामाजिक स्थिति में भी पहले से बढ़ोत्तरी होगी और लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। आप जीवन साथी के साथ कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं जो आपके लिए बहुत लाभदायक होगा। खुश रहें और नकारात्मक ऊर्जा व विचारों को अपने भीतर न आने दें। अपने ऊपर ध्यान दें और खुद को जीवन में आगे ले जाने के रास्ते निकालें। नव विवाहित जोड़ों के लिए ये माह चुनौतीपूर्ण रहेगा। लड़ाई, झगड़े व विवाद इस दौरान आपके जीवन में रहेंगे जिससे मानसिक शांति भी भंग होगी। यदि आप स्थिति को सुधारना चाहते हैं तो ध्यान व समझदारी के साथ काम लें। माह के लगभग पंद्रह दिन बाद चीज़ें सुधरने लग जाएंगी और भाग्य आपका साथ देगा। इस मास ६, ७, ८, १४, १५, १६, २४, २५, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर – विदेश में काम करने वाले जातकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी संभावनाएं हैं कि आप पर कोई बड़ा जैसे कागज़ात या पैसों की चोरी का आरोप लग सकता है। कार्यस्थल पर उच्च अधिकारियों से भी विवाद हो सकता है। माह की शुरुआत में आप लक्ष्यहीन होकर कार्य करेंगे लेकिन आधा माह बीत जाने पर आप अपनी एक नई शुरुआत करेंगे। ये समय आपके परिवार वालों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहेगा। माता-पिता के लिए समय उचित नहीं है। उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक अशांति या स्वास्थ्य संबंधी समस्या से गुज़रना पड़ सकता है, इसलिए उन पर इस दौरान ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक जीवन इस दौरान थोड़ा अस्त-व्यस्त रह सकता है। आपके परिवार वालों को आपसे कुछ समस्या हो सकती हैं और वो आपसे नाखुश हो सकते हैं। परिवार की ये समस्याएं कार्यक्षेत्र में भी देखने को मिल सकती हैं। इन सभी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करें और परिवारिक व व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाएं। इस मास ३, ४, ११, १२, १६, २, २१, २२, ३ दिनांक नेष्ट रहेगी।

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

राजा-शनि

विक्रमसंवत् - २०७९

कलिसंवत् - ५१२३

मन्त्री-गुरु

शकसंवत् - १९४४

ईसवीय - २०२२-२०२३

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्ता (अवैतनिक)

प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

© सम्पादक

उपहार

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)

प्रो० मीनाक्षी मिश्र

आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)

डॉ० अशोक थपलियाल

सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)

डॉ० देशबन्धु, डॉ० प्रवेश व्यास,
डॉ० योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० दीपक वशिष्ठ,
डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, श्री भगवतीप्रसाद त्रिपाठी

प्रकाशक नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2022 ई., **पुष्प** -अष्टम **मूल्य** - रु. 80/-

पञ्चाङ्ग परिचय

अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाददति सज्जनाः॥

– सम्पादक

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या	क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या	क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या
1.	पञ्चाङ्ग परिचय	01	25.	दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी	110	49.	षोडश कक्ष विचार	146
2.	मङ्गलवाक्	03	26.	दशमलग्नसारिणी	111	50.	विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र	147
3.	प्रास्ताविकम्	03	27.	मुहूर्त्त हेतु काल विवरण	112	51.	योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र	147
4.	संवत्सरादिफलम्	04-10	28.	विवाह मुहूर्त्त	113-120	52.	ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार	147
5.	वार्षिकराशिफल	10-34	29.	गोधूलि प्रशंसा	121	53.	कुण्डलीस्थ ग्रह फल	148
6.	ग्रहों का उदयास्त विचार	34	30.	वधूप्रवेश मुहूर्त	121-122	54.	गोचर वश ग्रह फल	149
7.	ग्रहों का राशि प्रवेश काल	35	31.	द्विरागमन मुहूर्त	122	55.	वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल	149
8.	सायन सूर्य राशि प्रवेश	35	32.	प्रसूतास्नान मुहूर्त	122-123	56.	शतपद चक्र	150
9.	ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल	36-37	33.	नामकरण मुहूर्त	123	57.	मेलापक विचार	151
10.	ग्रह मार्गी-वक्री विचार	37	34.	अन्नप्राशन मुहूर्त	124	58.	मेलापक सारिणी	152-155
11.	व्रत, पर्व एवं उत्सवादि	38-44	35.	कर्णवेध मुहूर्त	124-125	59.	वर्षफल निर्माण विधि	156-160
12.	सूर्यसङ्क्रान्तिपुण्यकाल	44	36.	चूडाकर्म मुहूर्त	125	60.	गोदान विधि	161-166
13.	विविध शुभ योग	45-47	37.	अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त	125-126	61.	यज्ञोपवीत धारण विधि	166-167
14.	ग्रहण विवरण (2022-23)	48-49	38.	उपनयन मुहूर्त	126	62.	सन्ध्याविधि	168-172
15.	नवग्रहस्तोत्रम्	50	39.	विपणि मुहूत	127-128	63.	षोडशोपचार पूजन विधि	173-179
16.	प्रात: स्मरणीय श्लोक	50	40.	सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त	128	64.	तर्पण प्रयोग	179-184
17.	पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण	51-74	41.	हलप्रवहण मुहूर्त	128-130	65.	पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त	185-186
18.	औदयिक स्पष्टग्रह	75-86	42.	बीजोप्ति मुहूर्त	130-132	66.	सूर्योदय व इष्टकाल साधन	186-188
19.	अक्षांश-रेखांश सारिणी	87-93	43.	गृहारम्भ मुहूर्त	132-133	67.	इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन	188-190
20.	ज्योतिषमाहात्म्यम्	93	44.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	133-134	68.	चौघड़िया मुहुर्त	190
21.	क्रान्ति सारिणी	94	45.	विविध मुहूर्तों का विचार	134-145	69.	अग्निवास व शिववास विचार	190
22.	चरसारिणी	95-96	46.	खात व काकिणी विचार	145	70.	गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल	190
23.	वेलान्तर सारिणी	97	47.	विभिन्न शुभाशुभ योग विचार	146	71.	ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल	191
24.	दैनिक लग्नसारिणी	98-109	48.	गण्डमूल बोधक चक्र	146	72.	नवग्रह शान्ति उपाय	192

मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यों के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्कुकलिको नाक्षत्रमस्तावार्यज-
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्समभियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-
पेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा स्यात्तिथिः॥-तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गों का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नहीं अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

गीता जयन्ती, सं २०७८ — प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी — संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विधा का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा॥
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य बुद्धिमान्।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्॥-सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुड़े सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

मकरसङ्क्रान्ति, सं.२०७८ — प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
उ.सं.वि.वि., हरिद्वार — सम्पादक

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग

नलनामसंवत्सर

राजा-बुध

विक्रम संवत् - २०८०

कलि संवत् - ५१२४

मन्त्री-शुक्र

शक संवत् - १९४५

ईसवीय - २०२३-२०२४

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता (अवैतनिक)

प्रो0 देवीप्रसाद त्रिपाठी

विभागाध्यक्ष (वास्तुशास्त्र)

श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली-110016

© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)

प्रो0 मीनाक्षी मिश्र

आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग

श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.

केन्द्रीय विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)

डॉ0 अशोक थपलियाल

सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग

श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.

केन्द्रीय विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)

डॉ0 देशबन्धु, डॉ0 प्रवेश व्यास,

डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ0 दीपक वशिष्ठ,

डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, डॉ0 अव्यक्त रैणा

प्रकाशक नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली

मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2023 ई., पुष्प -नवम मूल्य - रु. 80/-

पञ्चाङ्ग परिचय

अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्।।

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्।।

उपहार

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।।

- सम्पादक

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या
1.	पञ्चाङ्ग परिचय	01
2.	मङ्गलवाक्	03
3.	प्रास्ताविकम्	03
4.	संवत्सरादिफलम्	04-08
5.	वार्षिकराशिफल	08-32
6.	ग्रहों का उदयास्त विचार	32
7.	ग्रहों का राशि प्रवेश काल	33
8.	सायन सूर्य राशि प्रवेश	33
9.	ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल	34-35
10.	ग्रह मार्गी-वक्री विचार	35
11.	व्रत, पर्व एवं उत्सवादि	36-40
12.	विविध शुभ योग	41-42
13.	पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण	43-68
14.	ग्रहण विवरण (2023-24)	69
15.	नवग्रहस्तोत्रम्	70
16.	औदयिक स्पष्टग्रह	70-83
17.	प्रातः स्मरणीय श्लोक	83
18.	अक्षांश-रेखांश सारिणी	84-90
19.	ज्योतिषमाहात्म्यम्	90
20.	क्रान्ति सारिणी	91
21.	चरसारिणी	92-93
22.	वेलान्तर सारिणी	94
23.	दैनिक लग्नसारिणी	95-106
24.	दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी	107
25.	दशमलग्नसारिणी	108
26.	मुहूर्त्त हेतु काल विवरण	109
27.	विवाह मुहूर्त्त	110-113
28.	गोधूलि प्रशंसा	114
29.	वधूप्रवेश मुहूर्त	114-115
30.	द्विरागमन मुहूर्त	115-116
31.	प्रसूतास्नान मुहूर्त	117
32.	नामकरण मुहूर्त	117-118
33.	अन्नप्राशन मुहूर्त	118-119
34.	कर्णवेध मुहूर्त	119
35.	चूडाकर्म मुहूर्त	119-120
36.	अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त	120
37.	उपनयन मुहूर्त	120-121
38.	विपणि मुहूत	121-122
39.	सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त	122-123
40.	हलप्रवहण मुहूर्त	123
41.	बीजोप्ति मुहूर्त	123-124
42.	गृहारम्भ मुहूर्त	124-125
43.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	125-126
44.	विविध मुहूर्तों का विचार	126-137
45.	खात व काकिणी विचार	137
46.	विभिन्न शुभाशुभ योग विचार	138
47.	गण्डमूल बोधक चक्र	138
48.	षोडश कक्ष विचार	138
49.	विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र	139
50.	योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र	139
51.	ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार	139
52.	कुण्डलीस्थ ग्रह फल	140
53.	गोचर वश ग्रह फल	141
54.	वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल	141
55.	शतपद चक्र	142
56.	मेलापक विचार	143
57.	मेलापक सारिणी	144-147
58.	वर्षफल निर्माण विधि	148-152
59.	गोदान विधि	153-158
60.	यज्ञोपवीत धारण विधि	158-159
61.	सन्ध्याविधि	160-164
62.	षोडशोपचार पूजन विधि	165-171
63.	तर्पण प्रयोग	171-176
64.	पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त	177-178
65.	सूर्योदय व इष्टकाल साधन	178-180
66.	इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन	180-181
67.	चौघड़िया मुहुर्त	182
68.	अग्निवास व शिववास विचार	182
69.	गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल	182
70.	ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल	183
71.	नवग्रह शान्ति उपाय	184

मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यो के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जस्तमस्तवार्यज-
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्समभियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-
थापेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा स्यात्तिथिः।। -तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गो का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नही अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

गीता जयन्ती, सं 2079
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा।।
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य बुद्धिमान्।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्।। -सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।। सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुड़े सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

मकरसङ्क्रान्ति, सं.2079
नई दिल्ली

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
सम्पादक

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

संवत्सर-पिङ्गल

राजा-भौम

विक्रम संवत् - २०८१

कलि संवत् - ५१२५

मन्त्री-शनि

शक संवत् - १९४६

ईशवीय वर्ष - २०२४-२५

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - प्रो. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक
प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय
अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता (अवैतनिक)
प्रो0 देवीप्रसाद त्रिपाठी
अध्यक्ष-वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016
© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)
प्रो0 मीनाक्षी मिश्र
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)
प्रो0 अशोक थपलियाल
आचार्य- वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)
डॉ0 देशबन्धु, डॉ0 प्रवेश व्यास,
डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ0 दीपक वशिष्ठ,
डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, डॉ0 अव्यक्त रैणा

प्रकाशक नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2024 ई., **पुष्प** -दशम **मूल्य** - रु. 80/-

पञ्चाङ्ग परिचय

अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, समय 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कृर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशात्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥ - सम्पादक

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठसंख्या
1.	पञ्चाङ्ग परिचय	01
2.	मङ्गलवाक्	03
3.	प्रास्ताविकम्	03
4.	संवत्सरादिफलम्	04-08
5.	वार्षिकराशिफल	08-33
6.	ग्रहों का राशि प्रवेश काल	34
7.	सायन सूर्य राशि प्रवेश	34
8.	ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल	35-36
9.	ग्रह मार्गी-वक्री विचार	36
10.	व्रत, पर्व एवं उत्सवादि	37-41
11.	सूर्य संक्रान्ति पुण्यकाल	39
12.	विविध शुभ योग	42-43
13.	ग्रहण विवरण (2024-25)	44
14.	ग्रहों का उदयास्त विचार	44
15.	पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण	45-68
16.	औदयिक स्पष्टग्रह	69-80
17.	नवग्रहस्तोत्रम्	70
18.	अक्षांश-रेखांश सारिणी	81-87
19.	ज्योतिषमाहात्म्यम्	87
20.	क्रान्ति सारिणी	88
21.	चरसारिणी	89-90
22.	वेलान्तर सारिणी	91
23.	दैनिक लग्नसारिणी	92-103
24.	दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी	104
25.	[illegible]	[illegible]
26.	मुहूर्त हेतु काल विवरण	106
27.	विवाह मुहूर्त	107-109
28.	वधूप्रवेश मुहूर्त	110-111
29.	द्विरागमन मुहूर्त	111-112
30.	प्रसूतास्नान मुहूर्त	112
31.	नामकरण मुहूर्त	112-113
32.	अन्नप्राशन मुहूर्त	113
33.	कर्णवेध मुहूर्त	113-114
34.	चूडाकर्म मुहूर्त	114
35.	अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त	114-115
36.	उपनयन मुहूर्त	115
37.	विपणि मुहूत	115-116
38.	वस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त	116-117
39.	सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त	117
40.	हलप्रवहण मुहूर्त	117-118
41.	बीजोप्ति मुहूर्त	118-119
42.	गृहारम्भ मुहूर्त	119-120
43.	गृहप्रवेश मुहूर्त	120-121
44.	नवग्रह स्तोत्र	121
45.	गोधूलि प्रशंसा	122
46.	विविध मुहूर्तों का विचार	122-133
47.	खात व काकिणी विचार	133
48.	विभिन्न शुभाशुभ योग विचार	134
49.	गण्डमूल बोधक चक्र	134
50.	[illegible]	134
51.	विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र	135
52.	योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र	135
53.	ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार	135
54.	कुण्डलीस्थ ग्रह फल	136
55.	गोचर वश ग्रह फल	137
56.	वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल	137
57.	शतपद चक्र	138
58.	मेलापक विचार	139
59.	मंगली दोष विचार	140-141
60.	प्रातः स्मरणीय श्लोक	141
61.	मेलापक सारिणी	142-145
62.	वर्षफल निर्माण विधि	146-150
63.	गोदान विधि	151-156
64.	यज्ञोपवीत धारण विधि	156-157
65.	सन्ध्याविधि	158-162
66.	षोडशोपचार पूजन विधि	163-169
67.	तर्पण प्रयोग	169-174
68.	आमश्राद्ध	175-176
66.	पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त	177-178
67.	सूर्योदय व इष्टकाल साधन	178-180
68.	इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन	180-181
69.	चौघड़िया मुहुर्त	182
70.	अग्निवास व शिववास विचार	182
71.	गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल	182
72.	ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल	183
73.	[illegible]	184

मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यो के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जस्तमस्तवार्यज-
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्समभियं **प्रोक्ता मया सा तिथिः।**
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-
थापेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा **स्यात्तिथिः**।।-तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गों का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नही अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

गीता जयन्ती, सं 2080 — **प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय**
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी — **संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक**

प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा।।
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य **बुद्धिमान्**।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्।।-सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ **खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।**
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुडे सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

मकरसङ्क्रान्ति, सं.2080 — **प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी**
नई दिल्ली — **सम्पादक**